mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-239 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
29 अगस्त 2024 गुरुवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

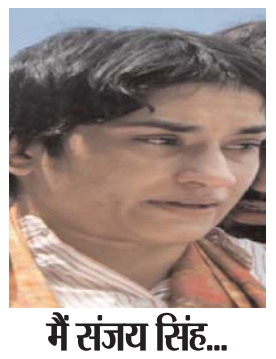

मैं संजय सिंह...
@ पेज 7

भारी बारिश से गुजरात में 'जल तांडव'

हर ओर सिर्फ हाहाकार, हाल हुए बेहाल, 50 ट्रेनें रद्द

18 जिलों में बाढ़,15 लोगों की जान गई,सेना तैनात

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरात के 13 जिलों में पिछले 24 घंटे में 200 मिमी से ज्यादा बारिश हुई। 18 जिलों में बाढ़ के हालात हैं, 5 जिलों राजकोट, आणंद, मोरबी, खेड़ा, वडोदरा और द्वारका में सेना को तैनात किया गया है। गुजरात में बाढ़-बारिश के चलते पिछले 3 दिनों में 15 लोगों की मौत हो गई। 23 हजार लोगों को रेस्क्यू किया गया है। 50 ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं। अहमदाबाद, राजकोट, बोटाद, आणंद, खेड़ा, महिसागर, कराच और मोरबी में प्राइमरी-सेकेंडरी स्कूलों और कॉलेजों की छुट्टी कर दी है। बुधवार और गुरुवार को सौराष्ट्र और कच्छ में बेहद भारी बारिश का अनुमान है। उत्तर प्रदेश में भी लखनऊ-आगरा समेत 10 जिलों में बारिश हो रही है। वाराणसी में इतनी बारिश हुई कि सड़कों पर खड़ी गाड़ियां डूब गई। पिछले 24 घंटे में 40 जिलों में 4.7 मिमी बारिश हुई है। बलिया में सरयू नदी खतरे के निशान से 1 मीटर ऊपर बह रही है। सरकार के आंकड़ों के मुताबिक गुजरात में बारिश का कोटा पूरा हो चुका है। कच्छ, सौराष्ट्र और दक्षिण गुजरात में सालाना औसत बारिश का आंकड़ा 100 प्रतिशत से ज्यादा हो गया है। राज्य के 76 बांध और तालाब 100 फीसदी भरे हुए हैं।

आईएमडी ने बताया है कि सौराष्ट्र-कच्छ में 2 दिन तक बारिश का रेड अलर्ट है। इसके अलावा अन्य जिलों में भी बारिश का दौर जारी रहेगा। 40-60 किमी/घंटे की रफ्तार से हवा भी चल सकती है। कई जिलों में बिजली गिरने का भी अलर्ट है। गुजरात सीएम भूपेंद्र पटेल ने बताया कि बाढ़ को लेकर पीएम मोदी से फोन पर बात हुई है।

संक्षिप्त समाचार

मोहन भागवत को मिलेगी पीएम मोदी और शाह जैसी सुरक्षा

नई दिल्ली (एजेंसी)। आरएसएस चीफ मोहन भागवत अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह जैसी एडवांस सुरक्षा के बीच रहेंगे। उनके जेड प्लस सुरक्षा कवर को बढ़ाकर एडवांस सिक्योरिटी लाइजन (एएसएल) कर दिया गया है। ऐसे में उनकी सुरक्षा में अब और सुरक्षाकर्मी तैनात किए जाएंगे। उनका सुरक्षा घेरा पहले से भी ज्यादा पुख्ता होगा। हाल ही में गृह मंत्रालय की ओर से की गई समीक्षा बैठक के बाद यह फैसला लिया गया है। खबर के मुताबिक समीक्षा बैठक में पाया गया कि गैर बीजेपी शासित राज्यों में मोहन भागवत की सुरक्षा के दौरान ढिलाई बरती गई है। ऐसे में संभावित खतरे को देखते हुए सुरक्षा में इजाफा करने का फैसला लिया गया है।

नारायण राणे और आदित्य ठाकरे के समर्थकों के बीच झड़प

सिंधुदुर्ग (एजेंसी)। महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग में राजकोट किले में 2 दिन पहले गिरी छत्रपति शिवाजी की प्रतिमा को लेकर राजनीतिक घटनाक्रम तेज हो गए हैं। शिवसेना नेता आदित्य ठाकरे और भाजपा सांसद नारायण राणे अपने-अपने समर्थकों के साथ एक ही समय पर राजकोट के किले (जहां शिवाजी की प्रतिमा थी) पहुंचे। यहां दोनों के समर्थक आपस में भिड़ गए। बुधवार सुबह आदित्य ठाकरे किले में अपने समर्थकों के साथ चर्चा कर रहे थे। इसी दौरान नारायण राणे अपने बेटे निलेश राणे और भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ राजकोट किला पहुंचे। यहां तैनात पुलिस अधिकारियों से उनकी बहस होने लगी।

बड़ा दावा! चंपाई सोरेन की हो रही थी जासूसी

- हिमंता बिस्वा सरमा ने कहा- फोन भी टेप हुआ होगा, हनी ट्रैप की थी साजिश

रांची (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस ने झारखंड पुलिस के दो अधिकारियों को हिरासत में लिया है। बीजेपी के वरिष्ठ नेता और असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिश्वा सरमा ने दावा किया कि दोनों अधिकारी मंत्री चंपाई सोरेन की जासूसी कर रहे थे। उन्होंने दावा किया कि झारखंड के एक आईजी स्तर के अधिकारी के निर्देश पर चंपाई सोरेन पर नजर रख जा रही थी। स्पेशल ब्रांच के दोनों अधिकारियों को उस वक्त चंपाई सोरेन के लोगों ने पकड़ा, जब दोनों कुछ तस्वीर ले रहे थे। हिमंता बिस्वा सरमा ने दावा किया कि चंपाई सोरेन कोलकाता से होते हुए दिल्ली गए थे और दोनों बार ताज होटल में रुके थे।

भारत की दूसरी न्यूक्लियर सबमरीन अरिघात बनकर तैयार

- 60 हजार क्विंटल वजन, 750 किमी तक मिसाइल अटैक की रेंज

आज नेवी को मिल सकती है

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की दूसरी न्यूक्लियर सबमरीन अरिघात बनकर तैयार है। इसे कल यानी 29 अगस्त को इंडियन नेवी को सौंपा जा सकता है। अरिघात को 2017 में लॉन्च किया गया था। तब से इसकी टेस्टिंग जारी रही। अब फाइनली इसे कमीशन किया जाएगा। अरिघात आईएनएस अरिहंत का अपग्रेडेड वर्जन है। इसे विशाखापत्तनम में भारतीय नौसेना के शिप बिल्डिंग सेंटर में बनाया गया था। अरिहंत की तरह ही अरिघात भी 750 किलोमीटर की रेंज वाली के-15 मिसाइलों से लैस होगी। इस सबमरीन का वजन 6 हजार टन (60 हजार क्विंटल) है। भारतीय नौसेना अब तक 3 न्यूक्लियर सबमरीन तैयार कर चुकी है। इसमें से एक अरिहंत कमीशंड है, दूसरी अरिघात मिलने वाली है और तीसरी डी 3 पर टेस्टिंग जारी है। इन सबमरीन के जरिए दुश्मन देशों पर परमाणु मिसाइल दागी जा सकती हैं। 2009 में पहली बार सांकेतिक तौर पर पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की पत्नी ने कारगिल विजय दिवस के मौके पर आईएनएस अरिहंत को लॉन्च किया था। इसके बाद 2016 में इसे नौसेना के बेड़े में शामिल किया गया। अगले 5 साल में दो और पनडुब्बियों को भारतीय नौसेना ने लॉन्च किया है। 2009 में लॉन्च करने से पहले भारत ने पनडुब्बियों को दुनिया से छिपा रखा था। 1990 में भारत सरकार ने एडवांस टेक्नोलॉजी वेसल प्रोग्राम शुरू किया था। इसके तहत ही इन पनडुब्बियों का निर्माण शुरू हुआ था। अरिघात समुद्र के अंदर मिसाइल अटैक करने में उसी तरह सक्षम है, जिस तरह अरिहंत ने 14 अक्टूबर 2022 को टेस्टिंग की थी। तब अरिहंत से इसकी सफल टेस्टिंग की गई थी। इसी के साथ भारत अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन के अलावा दुनिया का छठा न्यूक्लियर ट्रायड देश बन गया था।

बस बहुत हो गया, मैं भयभीत हूं...

कोलकाता डॉक्टर हत्या पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का बड़ा बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोलकाता में डॉक्टर के रेप और मर्डर के वीभत्स मामले पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की भी प्रतिक्रिया सामने आई है। उन्होंने बुधवार कि किसी भी सभ्य समाज में बहनों और बेटियों के साथ इस तरह की बर्बरता नहीं होने दी जा सकती। उन्होंने कहा कि कोलकाता में छात्र, डॉक्टर और नागरिक प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने महिलाओं के खिलाफ यौन उत्पीड़न और हिंसा की घटनाओं पर दुख जताते हुए कहा कि हर चीज की हद होती है। उन्होंने कहा, निर्भया गैंगरेप की घटना हुए 12 साल बीत चुके हैं। समाज ने अनगिनत रेप की घटनाओं को भुला दिया है। एक समाज के तौर पर हमारी यह सामूहिक विस्मृति चिंता की बात है। उन्होंने कहा कि हम सभी को मिलकर महिलाओं के खिलाफ हिंसा के मामलों से निपटना होगा।

बीजेपी के 'बंगाल बंद' के दौरान भारी बवाल-हिंसा

बीजेपी नेता की कार पर फायरिंग का दावा,हिरासत में लिए कई नेता

ममता बनर्जी बोलीं-16 दिन से सीबीआई जांच जारी, कहां है न्याय

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता में ट्रेनी डॉक्टर के रेप-मर्डर केस में छात्र संगठनों के प्रोटेस्ट मार्च के बाद भाजपा ने बुधवार को 12 घंटे का बंगाल बंद बुलाया है। बंद के दौरान कई जिलों में पुलिस और भाजपा समर्थकों के बीच झड़प हुई है। कई नेताओं-वर्कर्स को हिरासत में लिया गया है। नॉर्थ 24 परगना जिले के भाटपारा में भाजपा नेता प्रियंगु पांडे की कार पर फायरिंग हुई। प्रियंगु ने बताया- टीएमसी के लगभग 50-60 लोगों ने हमला किया। गाड़ी पर 6-7 राउंड फायरिंग की और बम फेंके गए। ड्राइवर समेत दो लोगों को गोली लगी है। एक गंभीर है। सुबह से ही बंद के आह्वान के कारण पश्चिम बंगाल में बसें और ट्रेन सेवाएं प्रभावित रहीं। इंडिगो, विस्तारा और स्पाइसजेट समेत प्रमुख एयरलाइनों ने शहर की खराब परिवहन व्यवस्था के कारण उड़ान बाधित होने की चेतावनी जारी की। प्रदर्शनकारी भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं को पुलिस के साथ छिटपुट झड़प करते देखा गया। इस बीच, टीएमसी और भाजपा नेताओं के बीच इस मामले को लेकर आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी रहा।

बंगाल में महिलाओं की सुरक्षा के लिए बनेगा नया कानून

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता की घटना की चौतरफा आलोचना और राज्य में बीजेपी के विरोध का सामना कर रही मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बड़ा ऐलान किया है। ममता बनर्जी ने बीजेपी के राज्य व्यापी बंद के बीच कहा है कि सरकार अगले हफ़्ते विधानसभा सत्र बुलाएंगी। इसमें बलात्कारियों के लिए मृत्युदंड सुनिश्चित करने के लिए 10 दिनों के भीतर एक विधेयक पारित किया जाएगा। हम इस विधेयक को राज्यपाल के पास भेजेंगे। अगर वह इसे पारित नहीं करते हैं, तो हम राजभवन के बाहर धरना देंगे। यह विधेयक पारित होना ही चाहिए और वह इस बार जवाबदेही से बच नहीं सकते। मुख्यमंत्री ने यह ऐलान बीजेपी के प्रदर्शन के दौरान किया।

ईसी ने नहीं लिया हरियाणा चुनाव तारीख बदलने पर फैसला

- आयोग का बीजेपी को झटका, पहले कांग्रेस समेत बाकी दलों से भी होगी चर्चा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा चुनाव की तारीख में बदलाव पर अंतिम फैसला आना बाकी है। इस पर फैसला लेने से पहले चुनाव आयोग राज्य की अन्य पार्टियों से भी राय लेने की तैयारी कर रहा है। माना जा रहा है कि जल्द ही वह अन्य राजनीतिक दलों से भी इस मुद्दे पर चर्चा करेगा। भाजपा ने मतदान डेट से पहले और बाद में छुट्टियों का हवाला देते हुए चुनाव आयोग के समक्ष बदलाव की मांग रखी। भाजपा का तर्क था कि लंबी छुट्टियों के कारण लोग घूमने जा सकते हैं। ऐसे में मतदान प्रतिशत कम हो सकता है। इनेलो ने भी इसका समर्थन किया। आयोग सभी दलों की सहमति होने पर ही कार्यक्रम में बदलाव पर आगे बढ़ेगा। सूत्रों की मानें तो आयोग भी इन दलों से सहमत है, लेकिन वह इस मुद्दे पर राज्य के अन्य दलों की राय भी जानना चाहता है। अगर सभी दल इस पर सहमत होते हैं, तो बदलाव किया जा सकता है।

पंजाब सरकार ने एसटीएफ को अपग्रेड कर एएनटीएफ बनाई

नशे के खिलाफ ऐक्शन की तैयारी, चैटबोट के साथ नया नंबर जारी

12 करोड़ खर्च

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब सरकार नशा तस्करों के खिलाफ आज से अपनी लड़ाई को और मजबूत करने जा रही है। सरकार ने अब नशा तस्करों पर कार्रवाई के लिए एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स गठित की है। यह पहले से ही काम रही रही स्पेशल टास्क फोर्स को अपडेट कर बनाई गई है। सीएम भगवंत मान ने इसका शुभारंभ किया। वहीं, नशा तस्करों के बारे में सूचना देने या कोई जानकारी देने के लिए चैट बोट नंबर जारी किया गया है। इसके लिए लोगों को 9779100200 पर कॉल करनी होगी। सूचना देने वाले का नाम गुप्त रखा जाएगा। मैसेज का जवाब भी मिलेगा। साथ ही कार्रवाई होने की सूचना भी दी जाएगी। पुलिस की तरफ से मोहाली में टास्क फोर्स इंटेलीजेंस एवं टेक्निकल यूनिट स्थापित की गई है। यहां माहिरों की स्पेशल टीम तैनात है।

अब अमेरिकी सेना का 'दिमाग पढ़ेंगे' भारत के कर्नल,हुई डील

- रक्षा आपूर्ति पर सोसा और अमेरिकी कमांड में भारतीय अफसर की तैनाती की डील
- अमेरिका के तीन कमांडों में भारतीय सेना के कर्नल रैंक के अफसरों की तैनाती शुरू

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के हालिया अमेरिकी दौरे में भारत ने रक्षा समझौतों के क्षेत्र में एक और बड़ा कदम बढ़ा दिया। भारत और अमेरिका के बीच दो प्रमुख समझौते हुए। इनमें एक भारत को अमेरिका की तरफ से रक्षा रसद की आपूर्तियों के लिए की गई डील सोसा (सिक्योरिटी ऑफ सप्लाइज अरेंजमेंट्स) है। दूसरी डील के तहत भारत को अमेरिकी सैन्य प्रतिष्ठानों में लाइजन अफसरों की तैनाती की अनुमति मिल गई है। सोसा जहां इंडो-यूएस डिफेंस इंडस्ट्रियल इकोसिस्टम्स को और मजबूती देगा, वहीं लाइजन अफसरों की तैनाती के समझौते के तहत अब फ्लोरिडा स्थित अमेरिकी स्पेशल ऑपरेशंस कमांड में कर्नल रैंक के एक भारतीय अफसर की तैनाती सुनिश्चित होगी। इसी डील में एक और अफसर को हवाई स्थित इंडो-पैसिफिक कमांड में भी तैनाती मिलेगी। अलग-अलग अमेरिकी कमांड में भारतीय सैन्य अफसरों की तैनाती कोई आम बात नहीं। भारतीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और अमेरिकी रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन की बातचीत में इस पर सहमति हुई।

देश में जोधपुर-आगरा समेत 12 औद्योगिक स्मार्ट शहर बनेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बुधवार को देशभर में 12 औद्योगिक स्मार्ट शहर स्थापित करने की मंजूरी दी है। इससे लगभग 10 लाख लोगों को रोजगार मिल सकेगा। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में लिए गए फैसलों के बारे में बताया कि केंद्रीय कैबिनेट ने आज राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास कार्यक्रम के अंतर्गत 12 औद्योगिक स्मार्ट शहरों को मंजूरी दी है। इससे घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा मिल सकेगा। इस योजना पर 28,602 करोड़ रुपये का निवेश होगा। वैष्णव ने बताया कि 10 राज्यों में फैली छह प्रमुख आर्थिक गलियारे भारत की विनिर्माण क्षमताओं और आर्थिक विकास को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। ये औद्योगिक क्षेत्र उत्तराखंड के खुरपिया, पंजाब के राजपुरा-पटियाला, महाराष्ट्र के दिघी, केरल के पलक्कड़, उत्तर प्रदेश के आगरा और प्रयागराज, बिहार के गया, तेलंगाना के जहीराबाद, आंध्र प्रदेश के ओरवाकल और कोप्पर्थी और राजस्थान के जोधपुर-पाली में स्थित होंगे। वैष्णव ने बताया कि प्रस्तावित 12 स्मार्ट औद्योगिक शहरों में लगभग 1.52 लाख करोड़ रुपये की निवेश संभावनाएं पैदा होंगी। उन्होंने कहा कि यह कदम देश के औद्योगिक परिदृश्य को बदल देगा, औद्योगिक नोड्स और शहरों का एक मजबूत नेटवर्क तैयार करेगा जो आर्थिक विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को काफी बढ़ावा देगा। वैष्णव ने कहा कि औद्योगिक क्षेत्रों को वैश्विक मानकों के ग्रीनफील्ड स्मार्ट शहरों के रूप में विकसित किया जाएगा।

10 राज्यों में 28 हजार करोड़ की स्कीम मंजूर, 40 लाख नौकरियां मिलेंगी

संक्षिप्त समाचार

आकांक्षा योजना से कराई जायेगी जनजातीय विद्यार्थियों को जेईई, नीट और क्लैट की तैयारी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जनजातीय कार्य विभाग मध्यप्रदेश के जनजातीय विद्यार्थियों की उच्च शिक्षण संस्थानों में शैक्षणिक सहभागिता बढ़ाने के उद्देश्य से फ्री कोचिंग प्रदान करेगा। विभाग ने जनजातीय विद्यार्थियों को मेडिकल, इंजीनियरिंग एवं लॉ की राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता परीक्षाओं जेईई, नीट और क्लैट की तैयारी करवाने के लिये %आकांक्षा योजना% बनाई है। जनजातीय विद्यार्थी इन प्रतियोगी परिक्षाओं में अपने शासकीय शिक्षकों की मदद लेकर स्वयं तैयारी कर विशेष स्थान प्राप्त कर रहे हैं। आकांक्षा योजना में 10वीं में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के इच्छुक विद्यार्थियों से ऑनलाइन आवेदन मांगे गए हैं। आवेदक विद्यार्थियों का कोचिंग संस्था द्वारा ली गई प्रवेश परीक्षा में मिले प्राप्तांकों के आधार पर मेरिट पर वांछित कोचिंग के लिए चयन किया जायेगा। आकांक्षा योजना के तहत शैक्षणिक सत्र 2024-25 में राज्य स्तर पर प्रवेश परीक्षा से 400 विद्यार्थियों का चयन जेईई के लिए किया जाएगा। जेईई की कोचिंग भोपाल, नीट की कोचिंग इंदौर में एवं क्लैट की कोचिंग के लिए जबलपुर को चुना गया है, इनमें 200-200 विद्यार्थियों को चुना जाएगा। आकांक्षा योजना में कोचिंग के लिए चयनित विद्यार्थियों को कोचिंग सेंटर पर भी रहने, खाने और पढ़ने की सुविधा दी जाएगी। उन्हें इसकी तैयारी से संबंधित पुस्तकें और स्टेशनरी सहित आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन भी दिया जाएगा। इन विद्यार्थियों को टेबलैट भी दिया जाएगा, जिसके लिए इंटरनेट एवं डाटा प्लान की सुविधा भी जनजातीय कार्य विभाग द्वारा निःशुल्क प्रदान की जायेगी।

प्रदेश में शाला जाने योग्य सभी बच्चों का नामांकन सुनिश्चित हो

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्कूल शिक्षा विभाग के सचिव डॉ. संजय गोयल ने जिला परियोजना समन्वयक को निर्देश दिये हैं कि उनके जिले में शाला जाने योग्य बच्चों का स्कूल नामांकन शत-प्रतिशत हो। इसके लिये उन्होंने अपने जिलों में मैदानी अमले के साथ सघन कार्यवाही करने के निर्देश दिये हैं। सचिव स्कूल शिक्षा ने आज भोपाल के राज्य शिक्षा केन्द्र में भोपाल और सागर संभाग के जिला परियोजना समन्वयक की बैठक में समीक्षा की। बैठक में शैक्षणिक अधोसंरचना के अपूर्ण निर्माण कार्यों को समय-सीमा में पूरा किये जाने के भी निर्देश दिये गये। सचिव स्कूल शिक्षा ने कहा कि स्कूल शिक्षा विभाग के निर्माण कार्यों में जो एजेंसी तय समय-सीमामें गुणवत्ता के साथ कार्य नहीं करती है, उनके खिलाफ वैधानिक कार्यवाही प्रस्तावित की जाये। बैठक में संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र श्री हरजिंदर सिंह ने कहा कि शाला जाने योग्य छात्रों का आधार पंजीयन और समग्र आईडी भी तैयार कराई जाये, जिससे नामांकन की सटीक प्रविष्टियाँ संबंधित पोर्टल पर दर्ज हो सकें।

प्रदेश के 3 शिक्षकों को मिला राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश के 3 शिक्षकों को वर्ष 2024 का राष्ट्रीय शिक्षक अवार्ड मिला है। यह घोषणा केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय नई दिल्ली द्वारा की गई है। मध्यप्रदेश के जिन 3 शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कार के लिये चयनित किया गया है, उनमें श्री माधव प्रसाद पटेल शिक्षक शासकीय मिडिल स्कूल लिधौरा जिला दमोह और सुश्री सुनीता गोधा शासकीय हाई स्कूल खजुरिया सारंग जिला मंदसौर हैं। इसके अतिरिक्त डिण्डोरी जिले के जवाहर नवोदय विद्यालय धामनगांव की शिक्षिका श्रीमती सुनीता गुप्ता को भी राष्ट्रीय स्तर का शिक्षक सम्मान मिला है। राष्ट्रीय स्तर का शिक्षक सम्मान समारोह नई दिल्ली में 5 सितम्बर शिक्षक दिवस पर होगा। चयनित हुए शिक्षकों को रजत पदक, प्रशस्ति-पत्र और 50 हजार रुपये की सम्मान राशि प्रदान की जायेगी। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षकों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि श्रेष्ठ कार्य करने वाले शिक्षकों की मेहनत का हमेशा सम्मान किया जाता है। उन्होंने उम्मीद व्यक्त की कि इन शिक्षकों के कार्यों से अन्य शिक्षकों को भी प्रेरणा मिलेगी।

सोशल मीडिया पर सार्वजनिक होंगे बड़े बिजली बकायादारों के नाम

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी, ऐसे बिजली उपभोक्ता जिनके द्वारा अपने बकाया बिजली बिलों का समय पर भुगतान नहीं किया जा रहा है, उनके नाम, पते और बकाया राशि की जानकारी को विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे वॉट्सऐप, फेसबुक, एक्स एवं इन्स्टाग्राम प्लेटफार्म पर पोस्ट करेगी। साथ ही उनसे बिजली बिल भुगतान की अपील की जाएगी। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी से प्राप्त जानकारी के अनुसार कंपनी कार्यक्षेत्र के भोपाल, नर्मदापुरम, ग्वालियर एवं चंबल संभाग अंतर्गत आने वाले सभी 16 जिलों के बड़े बिजली बकायादारों के नाम की सूची तैयार कर ली गई है।

मेडिकल कॉलेज और जिला चिकित्सालय में मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराएं

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने प्रभार ज़िले शहडोल में कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में ज़िला कार्य समिति की बैठक में विभिन्न विकास कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने निर्देश दिये कि उमरिया से शहडोल मार्ग और रीवा से शहडोल मार्ग के निर्माण कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ पूर्ण कराएं उन्होंने कार्य में विलंब पर नाराज़गी व्यक्त की। उन्होंने अक्टूबर माह तक सड़क निर्माण कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिये।

उन्होनें कहा कि निर्माण कार्य की वजह से गतिरोध न हो साथ ही सुरक्षा के लिए आवश्यक प्रावधान किए जायें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि शहडोल मेडिकल कालेज एवं जिला चिकित्सालय में मरीजों को उत्कृष्ट स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया होना चाहिए। उन्होंने जिला चिकित्सालय शहडोल में मरीजों की आवश्यकतानुसार 500 बेड की सुविधा के लिए प्रस्ताव शासन को प्रेषित करने के निर्देश दिये। उप

मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मेडिकल कालेज शहडोल में प्रदाय की जा रही चिकित्सकीय सुविधाओं की विस्तार पूर्वक जानकारी ली एवं आवश्यक निर्देश दिये। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने जल जीवन मिशन के कार्यों की समीक्षा की और कहा कि हर घर नल से शुद्ध जल प्रदाय सुनिश्चित किया जाये। उन्होंने स्कूलों तक पहुँच मार्गों को सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ पूर्ण करने की कार्रवाई करने के निर्देश दिये। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि जन-समस्याओं का प्राथमिकता के साथ निराकरण कराएं। अतिवर्षा के कारण हुए नुकसान का सर्वे कराएं तथा मुआवजे की राशि समय में लोगों को मिले यह सुनिश्चित करें। शहडोल नगर में सीवरेज कार्य अधूरा होने के कारण लोगों की काफी समस्याएं संज्ञान में आयी हैं। सीवरेज के कार्य को गुणवत्ता से पूर्ण कराएं, जिससे नागरिकों को असुविधा का सामना न करना पड़े। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सीएम राइज स्कूल का कार्य समय-सीमा में पूर्ण कराने के निर्देश दिए। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती प्रभा मिश्रा, विधायक जैतपुर एवं पूर्व मंत्री श्री जयसिंह मरावी, विधायक जयसिंहनगर श्रीमती मनीषा सिंह, विधायक ब्यौहारी श्री शरद कोल, कमिश्नर शहडोल संभाग श्री श्रीमन शुक्ल, पुलिस महानिरीक्षक श्री अनुराग शर्मा सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक एवं विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कलेक्टर कार्यालय के विराट सभागार में पीएम जन-मन कार्ड का विमोचन किया। उन्होंने कलेक्टर कार्यालय शहडोल के परिसर से पीएम जनमन आई ई सी कैंपन वैन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 5 सितम्बर को

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। लोक शिक्षण संचालनालय का इस वर्ष का राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस पर भोपाल के आरसीव्हीपी नरोन्हा प्रशासन अकादमी के स्वर्ण जयंती हॉल में आयोजित किया जा रहा है। राज्य स्तर के इस समारोह में राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार में 14 शिक्षकों को और पिछले वर्ष राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार-2023 के पुरस्कृत 2 शिक्षकों को सम्मानित किया जायेगा।

राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार के लिये शिक्षकों से आवेदन-नामांकन प्राप्त किये जाकर जिला चयन समिति एवं संभागीय चयन समिति की अनुशंसा प्राप्त की गई है। इस प्रक्रिया के बाद राज्य स्तरीय चयन समिति द्वारा कक्षा 1 से 8 प्राथमिक माध्यमिक श्रेणी में 8 शिक्षकों और कक्षा 9 से 12 उच्चतर माध्यमिक श्रेणी में 6 शिक्षकों इस प्रकार कुल 14 शिक्षकों का राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार के लिये चयन किया गया है। इन सभी शिक्षकों को समारोह में सम्मान राशि 25 हजार रूपये, शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया जाएगा। शिक्षक दिवस के आयोजन के मौके पर स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा नवीन शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में प्रौद्योगिकी का उपयोग और आनंदमयी शिक्षण विषय पर विकासखंड स्तरीय शैक्षिक संगोष्ठी होगी। इसी श्रृंखला में जिला स्तरीय संगोष्ठी में प्रारंभिक शिक्षा के लिये प्राथमिक विद्यालयों का आवश्यकता तथा योगदान विषय पर संगोष्ठी होगी। राज्य स्तर पर होने वाली संगोष्ठी में भारतीय परिदृष्य में रोजगारोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता तथा महत्व विषय पर चर्चा होगी। स्कूल शिक्षा विभाग ने जिला शिक्षा अधिकारियों को इन संगोष्ठियों में अधिक से अधिक सहभागिता किये जाने के निर्देश दिये हैं। संगोष्ठी 4 सितम्बर को होंगी। राज्य स्तरीय ज्यूरी द्वारा राज्य स्तर की शैक्षिक संगोष्ठी से चयनित प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त शिक्षक-शिक्षिकाओं को भी राज्य स्तर के इस कार्यक्रम में शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र एवं सम्मान राशि प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।

त्यौहार हमारे समृद्ध भारत की विरासत हैं, इन्हें धूमधाम से मनाएं-खाद्य मंत्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सागर जिले के राहतगढ़ में यादव समाज द्वारा कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा में खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत शामिल हुए। सभी क्षेत्र वासियों को उन्होंने कृष्ण जन्म उत्सव कृष्ण जन्माष्टमी की बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह त्यौहार हमारे समृद्ध भारत की धरोहर हैं, इन्हें धूमधाम से मनाना चाहिए। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा सभी त्यौहारों को परंपरा अनुसार और धूमधाम से मनाने के लिए लोगों का आवाहन किया गया है। त्यौहार

हमें धर्म से जोड़ते हैं और समाज में एकता का माहौल बनाते हैं। श्री राजपूत ने कहा कि भगवान श्री कृष्ण का जन्म जनकल्याण के लिए हुआ है। हम सभी को उनके पद्चिन्हों पर चलने का आज संकल्प लेना चाहिए। मंत्री श्री राजपूत को सभी क्षेत्रवासियों ने जन्मदिन की बधाइयाँ भी दी। उन्होंने एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत पौधरोपण किया।

आकांक्षा योजना की निःशुल्क कोचिंग जल्द से जल्द प्रारंभ करायें -जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. शाह

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जनजातीय कार्य, लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन एवं भोपाल गैस त्रासदी एवं पुनर्वास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने कहा है कि जनजातीय वर्ग के बच्चों को उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश कराने की तैयारी के लिये आकांक्षा योजना की निःशुल्क कोचिंग जल्द से जल्द प्रारंभ करें।

इससे बच्चों को प्रोत्साहन मिलेगा और वे प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने के गुर सीखेंगे। मंत्री डॉ. शाह आज मंगलवार को गैस राहत संचालनालय के सभाकक्ष में जनजातीय कार्य विभाग की योजनाओं की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे।

मंत्री डॉ. शाह ने कहा कि जनजातीय कार्य विभाग का खुद का डेटाबेस और एप तैयार करें। विभाग की पूरी संरचना और मानव संसाधन की पूरी जानकारी उसमें समाहित हों। बैठक में प्रमुख सचिव

जनजातीय कार्य विभाग डॉ. ई. रमेश कुमार, उप सचिव श्रीमती मीनाक्षी सिंह, उप सचिव श्रीमती दिशा प्रणय नागवंशी सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। मंत्री डॉ. शाह ने कहा कि विभाग के अधीन सभी श्रेणी के शिक्षक संवर्गों के सीधी भर्ती के पदों पर भर्ती करें। पदोन्नति के पदों पर उच्च पद का प्रभार देने की कार्यवाही 30 सितम्बर तक पूरा कर लें। उन्होंने कहा कि एकलव्य विद्यालय, कन्या शिक्षा परिसर और आदर्श आवासीय विद्यालयों के प्राचार्यों को सप्ताह में एक या एक से अधिक दिन एक घण्टा बच्चों को पढ़ाना होगा और उन्हें पढ़ाई व खेल के प्रति अभिप्रेरित करना होगा। छात्रावास में पढ़ने वाले बच्चों को भी सप्ताह में एक दिन एक घण्टे तक खेलने के लिये प्रेरित किया जायें।

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में पक्षी अवलोकन एवं नेचर कैम्प का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड के सहयोग से वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल मे छात्र-छात्राओं में वन, वन्य-प्राणियों एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा प्रकृति संरक्षण के प्रति सवेदनशीलता विकसित करने की दृष्टि से भोपाल शहर एवं उसके आस-पास के ग्रामों के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिये एक दिवसीय पक्षी अवलोकन एव नेचर कैम्प आयोजित किये जा रहे हैं। इसी क्रम में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मिसरोद भोपाल के 48 छात्र/छात्राओं एव 2 शिक्षकों ने उक्त पक्षी अवलोकन एवं नेचर कैम्प में भाग लिया। कार्यक्रम में स्त्रोत व्यक्ति के रूप में डॉ. एस.आर. वाघमारे से.नि. उप वनसंरक्षक एव पक्षीविद के रूप में मो. खालिक भोपाल बर्डस उपस्थित रहे। विषय-विशेषज्ञों द्वारा प्रतिभागियों को पक्षी-दर्शन, तितली, वन्य-प्राणी दर्शन-स्थल पर विद्यमान वानिकी गतिविधियों की जानकारी वन, वन्य-प्राणी व पर्यावरण से सबधित रोचक गतिविधियाँ कराई गई एवं जानकारी प्रदान कर उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया गया। साथ ही जैव विविधता एव उसके संरक्षण के बारे में छात्र/छात्राओं को विषय-विशेषज्ञों द्वारा जानकारी प्रदान की गई। नेचर कैम्प में बाघ, तेंदुआ, भालू, मगर, घड़ियाल, चीतल, सांभर, नीलगाय आदि वन्य-प्राणियों का भी अवलोकन किया। इस अवसर पर मिशन लाइफ अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण के लिये उपस्थित प्रतिभागियों द्वारा शपथ भी ली गई। इस दौरान संचालक वन विहार श्री मीना अवधेशकुमार शिवकुमार, सहायक संचालक, वन विहार, श्री एस.के. सिन्हा एवं अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

विद्यार्थी, राष्ट्र की संपत्ति और राष्ट्र निर्माण के कर्णधार हैं-श्री परमार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। विद्यार्थी, राष्ट्र की संपत्ति है। विद्यार्थी, राष्ट्र निर्माण में नींव का पत्थर हैं। शिक्षा का मूल ध्येय, विद्यार्थियों में राष्ट्र के प्रति सर्वोच्च समर्पण का भाव जागृत कर श्रेष्ठ नागरिक निर्माण करना है। यह बात उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने मंगलवार को भोपाल के मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (मैनिट) परिसर स्थित सिविल सभागार में आयोजित भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान भोपाल के आठवें अभिविन्यास (ओरिएंटेशन) कार्यक्रम दीक्षारंभ में सम्मिलित होकर कही।

मंत्री श्री परमार ने देश भर से संस्थान में नव-प्रवेशित विद्यार्थियों का राजा भोज की नगरी में अभिनंदन किया और उन्हें उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित की। श्री परमार ने कहा कि पूरे देश भर से प्रवेशित विद्यार्थियों का एकत्रीकरण, संस्थान में लघु भारत को प्रदर्शित करता है। श्री परमार ने कहा कि भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान में अध्ययन के उपरांत, रोजगार के लिए अपार संभावनाएं हैं। तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री परमार ने कहा

कि भारत, ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी होकर विश्व को मार्गदर्शन करने वाला राष्ट्र रहा है। हमारे पूर्वजों ने जो श्रेष्ठ जीवन मूल्य स्थापित किए थे, उन मूल्यों के आधार पर राष्ट्र के परम वैभव की पुनः प्राप्ति में सहभागी बनने की आवश्यकता है। स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष में देश को ज्ञान के क्षेत्र में पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए विद्यार्थियों को नींव का पत्थर बनना होगा। इसके लिए अपने लोगों, अपने ज्ञान, श्रेष्ठ जीवन पद्धति और अपनी उपलब्धियों पर गर्व करने का भाव जागृत करने की आवश्यकता है। श्री परमार ने विद्यार्थियों को सर्वोच्च समर्पण के साथ राष्ट्र एवं समाज निर्माण में सहभागिता कर शिक्षा के सम्पूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित भी किया। श्री परमार ने कहा कि विद्यार्थियों का शिक्षा अर्जित करने का उद्देश्य मात्र रोजगार प्राप्ति न होकर, समाज के प्रश्नों का समाधान करने में सहभागिता करने वाला श्रेष्ठ नागरिक बनना हो।

उन्होंने कहा जिस तरह से हमारे पूर्वजों ने भारत को विश्वमंच पर सिरमौर बनाकर विश्वगुरु बनाया था, उसी तरह हमें भी अपने जीवन को सार्थक बनाकर देश की प्रगति में अपना सर्वोच्च समर्पण देना होगा और भारत को पुनः विश्वमंच पर सर्व शक्तिशाली बनाने की संकल्पना में सहभागिता कर, अपने पूर्वजों का ऋण अदा करना होगा।

सभी सामाजिक बोर्ड युवाओं के रोजगार सृजन में अपनी महती भूमिका निभायें-मंत्री श्री टेटवाल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कौशल विकास एवं रोजगार राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल ने कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर में मध्यप्रदेश राज्य कौशल विकास एवं रोजगार निर्माण बोर्ड अन्तर्गत गठित विभिन्न बोर्डों के अध्यक्षों के साथ बैठक की एवं कौशल विकास तथा रोज़गार से संबंधित विभिन्न विषयों पर संवाद कर भविष्य की रूपरेखा तय की। मंत्री श्री टेटवाल ने कहा कि सभी बोर्ड लघु अवधि कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर अधिक से अधिक युवाओं को रोजगार एवं स्व-रोजगार से जोड़ने के लिये कारगर प्रयास करें। उन्होंने कहा कि सभी सामाजिक बोर्ड युवाओं के रोजगार सृजन में अपनी महती भूमिका

सुनिश्चित करें। बैठक में श्री नारायण सिंह कुशवाहा अध्यक्ष मध्यप्रदेश कुशवाहा समाज कल्याण बोर्ड, श्री रविकरण साहू अध्यक्ष मध्यप्रदेश तेलघानी बोर्ड, श्री लालाराम मीना अध्यक्ष मध्यप्रदेश जय मीनेश कल्याण बोर्ड, श्री दुर्गेश सोनी अध्यक्ष मध्यप्रदेश स्वर्णकला बोर्ड, श्री गयाप्रसाद कीर अध्यक्ष मां पूरी बाई कीर कल्याण बोर्ड, श्री प्रेमनारायण विश्वकर्मा अध्यक्ष मध्यप्रदेश विश्वकर्मा कल्याण बोर्ड, श्री लक्ष्मीनारायण गोरा अध्यक्ष मध्यप्रदेश वीर तेजाजी बोर्ड, श्री महेश ढालिया अध्यक्ष मध्यप्रदेश रजक कल्याण बोर्ड, एवं कौशल विकास एवं रोजगार विभाग के सचिव श्री रघुराज राजेन्द्रन एवं सीईओ श्री गौतम सिंह उपस्थित रहे।

आगामी चलित न्यायालय एवं दिव्यांगजन सहायता शिविर की व्यवस्थाओं पर चर्चा एवं एडवोकेसी बैठक आयोजित

नि:शक्तता प्रमाण पत्र बनाने के लिए विशेष शिविरों का आयोजन करें - सांसद

जिले के शतप्रतिशत दिव्यांगजनों का चिन्हांकन प्राथमिकता से करें: आयुक्त

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। आगामी चलित न्यायालय एवं दिव्यांगजन सहायता शिविर की व्यवस्थाओं पर चर्चा एवं एडवोकेसी बैठक में सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने दिव्यांगजनों के चिन्हांकन के लिए तथा उनके निःशक्तता प्रमाण पत्र बनाने के लिए विशेष शिविरों के आयोजन के लिए निर्देशित किया। सांसद ने कहा कि कोई भी दिव्यांग शासन की योजनाओं के लाभ से वंचित नहीं रहे, इसके लिए सभी विभाग आपसी समन्वय से कार्य करें। दिव्यांगजनों से संबंधित सभी योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार करें जिससे लोगों को इसके संबंध में किसी भी प्रकार का भटकाव नहीं हो। दिव्यांगजनों को सभी सहायक उपकरणों की उपलब्धता प्राथमिकता के आधार पर सुनिश्चित हो।

आयुक्त निःशक्तजन कल्याण मध्यप्रदेश श्री संदीप रजक ने कहा कि दिव्यांगजनों के हितार्थ शासन द्वारा विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। इन योजनाओं की सफलता के लिए आवश्यक है कि जिले के शतप्रतिशत दिव्यांगजनों का चिन्हांकन प्राथमिकता से करें। उन्होंने कहा कि पूर्व में केवल सात प्रकार की अक्षमता को ही दिव्यांगता में शामिल किया गया था। लेकिन अब मेडीकल शारीरिक अक्षमताओं को भी मिलाकर कुल 21 प्रकार की डिसेबिलिटी को दिव्यांगता में शामिल किया गया है। इनमें सिकल सेल एनीमिया, स्पीच एंड लैंग्वेज डिसेबिलिटी, लोविजन, डवारफिज्म, मेंटल इलनेस, हियरिंग इम्पेयर मेट, थैलेसिमिया, हीमोफीलिया भी शामिल है।

जिले में दिव्यांगजनों की संख्या 15 हजार को जनसंख्या के अनुपात में कम बताते हुए आयुक्त निःशक्तजन ने कहा कि दिव्यांगता के 21 प्रकारों का व्यापक प्रचार-प्रसार करायें, ताकि लोगों में जागरूकता आए। शासकीय कार्यालयों, ग्राम पंचायतों, नगरीय निकायों, चिकित्सालयों, शैक्षणिक संस्थाओं में बोर्ड लगाकर प्रचार-प्रसार करें। इसके साथ ही पुलिस कर्मियों को भी उक्त के विषय में जागरूक कर उनके संवेदीकरण की आवश्यकता है।

सप्ताह में दो दिवस बैठेगा मेडिकल बोर्ड: आयुक्त निःशक्तजन कल्याण ने कहा कि दिव्यांगजनों के शतप्रतिशत निःशक्तता प्रमाण पत्र बनाने के लिए जिले में अभियान चलाएं। इस दौरान जिला चिकित्सालय में सप्ताह में दो दिवस मंगलवार एवं शुक्रवार को मेडिकल बोर्ड की सुविधा रहे। साथ ही आवश्यकतानुसार विकासखंड स्तर पर भी शिविरों का आयोजन करें। उन्होंने सभी यात्री बसों में दिव्यांगजनों के लिए आरक्षित सीट तथा किराया में छूट के संबंध में जानकारी प्रदर्शित करने के निर्देश दिए हैं। इसी प्रकार दिव्यांगजनों के लिए स्वरोजगार योजनाओं के प्रकरणों में एलडीएम निगरानी रखें। यह सुनिश्चित करें कि अनावश्यक कारणों से ऋण प्रकरण निरस्त नहीं हों।

आयुक्त निःशक्तजन ने जिले में स्कूल, अस्पताल सहित पीआईयू लोक निर्माण विभाग द्वारा बनाए जाने वाले सभी बड़े भवनों में दिव्यांगजनों को बाधा रहित आवागमन के लिए रैम्प की सुविधा की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के तहत सभी भवनों में रैम्प का निर्माण अनिवार्य है। यदि किसी भवन में रैम्प नहीं बना है तो निर्माण एजेंसी को नोटिस जारी कर रैम्प का निर्माण कराये। भवनों में बनाए जाने वाले रैम्प में निर्धारित मानकों का भी पालन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने बताया कि पुराने भवनों में लिफ्ट एवं रैम्प के निर्माण के लिए प्रावधान है उक्त के संबंध में इस्टीमेट बनाकर प्रस्तुत करें। आयुक्त निःशक्तजन ने योजनाओं के क्रियान्वयन में स्वयंसेवी संस्थाओं सहभागी बनाने के लिए कहा।

कलेक्टर सोमवंशी ने बताया कि सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना में सेचुरेशन के लिए जिले में माह जून-जुलाई में शून्य शक्ति अभियान चलाया गया था। इस अभियान के दौरान जिले में 3187 नए हितग्राहियों के सामाजिक सुरक्षा पेंशन स्वीकृत किए गए हैं। कलेक्टर ने बताया कि माह सितंबर में जिले में शून्य शक्ति अभियान 2.0 संचालित किया जाएगा जिसमें दिव्यांगजनों से संबंधित योजनाओं का प्राथमिकता से क्रियान्वयन किया जाएगा जिससे कोई भी दिव्यांग शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं से वंचित नहीं रहेगा।

बैठक में अपर कलेक्टर राजेश शाही, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविंद श्रीवास्तव सहित सभी विभागों के जिलास्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

विकलांगता निवारण और चिकित्सा पुनर्वास केन्द्र का हुआ शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। जिले में बुधवार को विकलांगता निवारण और चिकित्सा पुनर्वास केन्द्र का शुभारंभ मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ आई जे गुप्ता द्वारा जिला चिकित्सालय फिजियोथेरापी यूनिट में किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा सबसे पहले महात्मा गांधी जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर डीपीएमआर कॉर्नर का शुभारंभ किया गया।

सिविल सर्जन मुख्य अस्पताल सह अधीक्षक डॉ दीपारानी ने कहा कि कुष्ठ रोग आसानी से पहचाने जाने एवं ठीक होने वाला बीमारी है। अस्पताल में डीपीएमआर कॉर्नर खुलने से विकृत ग्रेड 1 और ग्रेड 2 कुष्ठ रोगियों को जल तेल उपचार एक्सरसाइज की सुविधा उपलब्ध हो जाएगी।

जिला कुष्ठ अधिकारी डॉ नागेंद्र बिहारी दुबे द्वारा बताया गया कि उपलब्ध कर्मचारी, संसाधन के अनुसार एवं शासन निर्देशानुसार कुष्ठ रोगी खोजने का कार्य लगातार किया जा रहा है जैसे एफएलसी, एसडीआर , पेप , फॉलोअप और हेल्थी कॉन्टेंट आदि।

एमएमएस शेषमणि त्रिपाठी द्वारा कुष्ठ रोग के विषय में जानकारी दी गई। कुष्ठ रोग एक बैक्टीरिया से होने वाली बीमारी है या छुआछूत की बीमारी नहीं है। इस रोग की शुरुआत में पहचान करवाई जाए एवं पूर्ण उपचार तो पूर्ण रूप से ठीक हो सकते है ।

रजनीश तिवारी ने कुष्ठ रोग पहचान के बारे में बताया कि चमड़ी पर चमड़ी के रंग से फीका दाग धब्बे, जिसमें सुन्नपन ,सूखापन, पसीना ना आना, खुजली, जलन चुभन ना होना, हाथ पैर में सुन्नपन ,कमजोरी ,चेहरे पर तेलीय चमक , भाउ के बाल झड़ जाना, कान पर सूजन ,गांठ का होना कुष्ठ रोग के लक्षण है। एमडीटी कुष्ठ रोग की शर्तिया इलाज है जो पीबी रोग के लिए 6 माह और एमबी रोग को 12 माह तक दवा चलती है जो सरकारी अस्पताल एवं स्वास्थ्य केंद्रों में निरूशुल्क मिलती हैं

तेजस्वानी उईके द्वारा बताया गया कि डीपीएमआर कॉर्नर के अंतर्गत आने वाले कुष्ठ रोगियों को विकलांगता से बचाव और सुरक्षा के बारे में बताया गया। स्वास्थ्य शिक्षा कुष्ठ रोगियों को एमसीआर, सेल्फकेयर एवं जल तेल का आयोजन समय-समय पर किया जाएगा । अयोजन में कुष्ठ कार्यकर्ता एवं समस्त कर्मचारी और ग्रेड 2 कुष्ठ रोगी उपस्थित रहे ।

माह अगस्त का खाद्यान्न 31 अगस्त के पूर्व अनिवार्य रूप से प्राप्त कर लें

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। जिला आपूर्ति अधिकारी ने जानकारी देकर बताया है कि प्रमुख सचिव मध्यप्रदेश शासन खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग मंत्रालय भोपाल के अर्द्धशासकीय पत्र 12 अगस्त 2024 द्वारा आईएफएसए 2023 अंतर्गत सम्मिलित पात्र परिवारों एवं प्रतिमाह वितरण खाद्यान्न के डाटा का मिलान हेतु मैपर्स रिपोर्ट की संशोधित स्टेण्डर्ड ऑपरेटिंग प्रोसिजन निर्धारित की गई है जिसके अनुसार आवंटन माह 01 से 30 तारीख तक पात्र परिवारों को खाद्यान्न वितरण की समय-सीमा निर्धारित की गई है। जिले के सभी पात्र हितग्राही जिन्होने आज दिनांक तक माह अगस्त 2024 का खाद्यान्न नहीं लिया है वे 31 अगस्त 2024 तक आवश्यक रूप से उचित मूल्य दुकानों से बायोमेट्रिक के माध्यम से राशन प्राप्त करना सुनिश्चित करें।

इस गांव तक पहुंचने के लिए नहीं है रोड

बीमारों को अस्पताल पहुँचाने खटिया का सहारा, डायल-100 भी नहीं पहुंच सकती यहां

मीडिया ऑडीटर, पन्ना निप्र। भले ही सरकार गांव गांव तक पहुँच मार्ग बनवाने का दावा कर रही है। लेकिन पन्ना जिले में आज भी कुछ ऐसे गांव है जहां के लोग मूलभूत सुविधाओं के लिए तरस रहे हैं। मामला पन्ना जिला मुख्यालय से लगभग 12 किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत कुड़ार के गांव कोतवालीपुर और मजरा करींपुरा का है।

दोनों बस्तियों में आज तक प्रशासन सड़क मार्ग नहीं बनवा सका है। जिससे ग्रामीण खेतों की मेड़ों से आवागमन करने को मजबूर है। गांव में किसी के बीमार हो जाने से खटिया का सहारा लेना पड़ता है और चार कंधों के सहारे सफर तय करना होता है। उसके बाद वाहन की व्यवस्था होती है।

दरअसल पन्ना जिला मुख्यालय से महज 12 किलोमीटर दूर स्तिथ ग्रामपंचायत कुड़ार के गांव कोतवालीपुर और मजरा करींपुरा में करीब 200 लोग निवास करते है। लेकिन गांव के एक तरफ पीटीआर और दूसरे तरफ निजी खेत होने के कारण गांव वालों को आज तक सड़क मार्ग नसीब नहीं हो सका है। जिससे ग्रामीणों को बड़ी परेशानियों का सामना करना होता है। बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है तो वहीं गांव में किसी के बीमार हो जाने से उसे समय पर अस्पताल नही पहुँचाया जा सकता।

ऐसे में गांव के लोग एकजुट होकर चार पाई यानी खटिया पर लिटाकर गांव से मुख्य मार्ग तक पहुँचाते हैं। गाँव की निवासी मीरा बाई बंशकार ने बताया कि गांव के लिए कोई रास्ता नहीं है। खेतों की मेड़ से आना जाना पड़ता है। बरसात के दिनों में खेतों में फसलों की सुरक्षा हेतु बाड़ लग जाने एवं कीचड़ की वजह से आवागमन में कठिनाइयां बढ़ जाती हैं।

बीमार व्यक्ति या गर्भवती महिला को अस्पताल पहुंचाने के लिए खाट का सहारा लेना पड़ता है। क्योंकि यहां एम्बुलेंस, जननी एक्सप्रेस या डायल 100 जैसे इमरजेंसी वाहन पहुंचना मुश्किल हो जाता है। बरसात में बीमार होने पर अस्पताल नहीं पहुंच पाने से यहां के कई लोगों की मौत भी हो चुकी है।

पीएम जनमन अभियान के आईईसी कैम्पेनिंग के तहत प्रचार रथ रवाना

सांसद तथा आयुक्त नि:शक्तजन कल्याण ने दिखाई हरी झंडी

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान आई.ई.सी. कैम्पेनिंग के तहत सांसद डॉ राजेश मिश्रा, आयुक्त निःशक्तजन कल्याण संदीप रजक तथा कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। पी.एम.जनमन रथ 05 पी.व्ही.टी.जी. आदर्श ग्रामों (करवाही, पॉड, टंसार, कठार एवं बारी कोठार) के साथ पी.व्ही.टी.जी. बैगा बाहुल्य ग्रामों का भ्रमण करेगा।

देश के 18 राज्यों की 75 विशेष पिछडी जनजाति के लिये अद्योसंरचनात्मक विकास एवं सामाजिक आर्थिक पिछड़ापन को दूर करने हेतु यह योजना क्रियान्वित की गई है। सीधी जिले में विशेष पिछडी जनजाति बैगा जनजाति है जो 05 विकासखंडों के 174 ग्रामों में निवासरत हैं जिनकी जनसंख्या 33752 है। योजना अन्तर्गत 09 विभागों की 11 सेवाओं को सम्मिलित किया गया है जिसमें सबको प**राजस्थान पत्रिका** । घर, हर घर नल से जल, गॉव गॉव तक सड़क, हर घर बिजली, शिक्षा के लिए हास्टल, कौशल विकास, दूर दराज गॉवों तक मोबाईल मेडिकल यूनिट, सबको पोषण, उन्नत आजीविका, दूर दराज गॉवों तक मोबाईल नेटवर्क इसके अतिरिक्त हितग्राही मूलक योजनाओं में आधार कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, जनधन खाता, आयुष्मान कार्ड, राशन कार्ड, पी.एम.किसान सम्मान निधि, किसान क्रेडिट कार्ड आदि योजनाओं में शत प्रतिशत लाभान्वित किया जाना है।

इस अवसर पर जिला पंचायत सदस्य सुश्री पूजा सिंह कुशराम, अपर कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सीधी श्री राजेश शाही के अतिरिक्त विभागीय अधिकारी सहायक आयुक्त डॉ.डी.के.द्विवेदी आदि उपस्थित थे।

शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए अभिनव पहल

ट्यूनिंग आफस्कूल से पढ़ाई में स्मार्ट बनेंगें सरकारी स्कूल के विद्यार्थी

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। हमारे विद्यार्थी जिस विद्यालय में अध्ययनरत है वे अपने आस-पास के अन्य शासकीयध्निजी और सार्वजनिक स्कूलों सहित सभी स्कूलों के बीच परस्पर सहयोग और सकारात्मक तालमेल बढ़ाने के लिये परस्पर संबंध कर सके उसके साथ विभिन्न सांस्कृति , साहित्यिक, खेलकूद आदि आयोजनों में सहभागिता कर सके तथा वहां के विद्यार्थियों को अपने साथ अपने विद्यालय में भी विभिन्न स्तरों पर सहभागिता के अवसर उपलब्ध करा सके। इस दृष्टि से जिले के प्रति विकास खण्ड के 4 विद्यालय कुल 20 चयनित विद्यालयों में योजना का क्रियान्वयन किया जाना है।

कल्चरल ट्विनिंग हेतु विद्यालयों की जोड़ी: कुसमी ब्लाक में मॉडल स्कूल कुसमी के साथ जूरी, पोड़ी बस्तुआ के साथ लुरघुटी, मझौली में टिकरी के साथ महखोर, पथरौला के साथ खडौरा, रामपुर नैकिन ब्लाक में सी.एम.राईज रामपुर नैकिन के साथ कन्या रामपुर नैकिन, बागढ के साथ अमिलई, सीधी ब्लाक में उपनी के साथ कुचवाही, पनवार के साथ बंजारी और सिहावल ब्लाक में खुटेली के साथ नकझरकला, सपही के साथ पोखरा स्कूल को जोड़ा गया है।

डॉ सुजीत कुमार मिश्रा, एपीसी रमसा ने जानकारी देकर बताया कि यह विद्यालय आपस में पाठ्यक्रम, शैक्षणिक गतिगतिविधियॉ, खेलकूद कार्यक्रम, वार्षिक कार्यक्रम, शैक्षणिक भ्रमण, कैरियर सम्बंधी गतिविधियों की भागीदारी, विद्यालय की संस्कृति, परिवेश, शिक्षण का ढंग, उपलब्ध सुविधायें आदि को जानने एवं नया सीखने का अवसर मिल सके, इसके अतिरिक्त एक-दूसरे के विद्यालय में खेलकूद, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक आयोजन, संवाद आदि में सहभागिता कराये जाने के अवसर भी उपलब्ध कराये जा सकते है। यह विद्यालय एक दूसरे की आवश्यकताओं को अनुभव कर उसकी पूर्ति हेतु प्रयास कर सके तथा एक दूसरे के विद्यार्थियों को अपने यहां आयोजित होने वाली गतिविधियों में सहभागिता के अवसर उपलब्ध करा सकें।

सहयोगी स्कूल एवं सहभागी स्कूल के बीच अकादमिक और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के संचालन को साझा करना, ज्ञान साझा करते हुए शिक्षको और छात्रों की दक्षता में वृद्धि करना, छात्रों को पीयर-टू-पीयर और ग्रुप लर्निंग के साथ व्यावहारिक रूप से सीखने में सक्षम बनाना, दोनो सहयोगी स्कूलों द्वारा एक दूसरे की सर्वोत्तम गतिविधियों को अपनाना, शिक्षण को बेहतर और अधिक प्रभावी बनाने के अवसर प्रदान करना मुख्य उद्देश्य है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का दूसरा दिन

श्री जुगलकिशोर जी भगवान के भंडारे का प्रसाद पाने पहुंचे हजारों भक्त, रात 1 बजे तक चला भंडारा

मीडिया ऑडीटर, पन्ना निप्र। पन्ना के भगवान श्री जुगल किशोर सरकार के मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव के दूसरे दिन मंगलवार की रात विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें प्रसाद पाने के लिए जिले सहित आसपास के जिलों के हजारों की संख्या में श्रद्धालु प्रसाद ग्रहण करने पहुंचे। रात 10:45 बजे भगवान को प्रसाद लगाने के बाद भंडारा शुरू हुआ। जो करीब रात्रि 1 बजे तक चलता रहा है।

दरअसल मंदिरों की नगरी पन्ना के श्री जुगलकिशोर जी के मंदिर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के बाद दूसरे दिन भी विभिन्न कार्यक्रम हुए। जिसमें दिनभर मंदिर में सोहर गाए गए और बधइयां चलती रही। वहीं रात 10:45 बजे भगवान की श्यन आरती हुई और भगवान को प्रसाद लगाया गया। उसके बाद विशाल भंडारा शुरू हुआ जो देर रात तक चलता रहा।

मंदिर परिसर में सुबह से ही भंडारे की तैयारियां शुरू हो गई थी। मंदिर परिसर में बने संस्कृति भवन के शेड में पुरुषों के लिए भंडारे की व्यवस्था की गई थी। वहीं मंदिर के प्रांगण के दो तरफ महिलाओं के लिए प्रसाद ग्रहण की व्यवस्था की गई थी। भंडारे का कार्यक्रम रात करीब एक बजे तक चला। हजारों की संख्या में भक्तों ने भगवान के भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया।

डिप्टी सीएम का शहडोल दौरा

खराब सड़कों को देख भड़के, अफसरों से बोले- अक्टूबर तक हर हाल में उमरिया और रीवा मार्ग करें दुरुस्त

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। उप मुख्यमंत्री और जिले के प्रभारी मंत्री राजेन्द्र शुक्ल एक दिवसीय प्रवास पर शहडोल पहुंचे। इस दौरान प्रभारी मंत्री ने कलेक्ट्रेट में बुधवार को अधिकारियों के साथ विभिन्न कार्यों की समीक्षा बैठक ली। वहीं भाजपा कार्यालय में पहुंचकर विधायकों और कार्यकर्ताओं के साथ भी चर्चा की।

कलेक्ट्रेट में आयोजित बैठक के दौरान डिप्टी सीएम और प्रभारी मंत्री राजेंद्र शुक्ल उमरिया से शहडोल और रीवा से शहडोल हाईवे के निर्माण में देरी को लेकर नाराजगी व्यक्त की उन्होंने अधिकारियों से कहा कि इन दोनों मार्गों का निर्माण कार्य जल्द से जल्द पूरा कराएं।

अधिकारी इस कार्य को प्राथमिकता से लें और इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतें। वहीं डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल ने बताया कि टेटका मोड़ से शहडोल तक नवीन सड़क निर्माण के लिए सरकार ने 200 करोड रुपए की स्वीकृत दी है, जल्दी टेटका मोड़ से शहडोल तक नवीन सड़क का निर्माण कार्य शुरू किया जाएगा।

डिप्टी सीएम ने अक्टूबर तक का दिया समय: उप मुख्यमंत्री ने सड़कों के निर्माण कार्यों से जुड़े अधिकारियों और निर्माण एजेंसियों को निर्देश दिए हैं कि वह आपस में समन्वय स्थापित कर दोनों सड़कों का निर्माण अक्टूबर 2024 तक पूर्ण कराना सुनिश्चित कराएं। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने अधिकारियों और निर्माण एजेंसियों को निर्देश दिए हैं कि रीवा से शहडोल और उमरिया से शहडोल मार्ग का कार्य युद्ध स्तर पर प्रारम्भ कराएं।

जिला अस्पताल में होंगे 500 बिस्तर: बैठक में शासन की संचालित स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा करते हुए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि शहडोल मेडिकल कॉलेज और जिला चिकित्सालय शहडोल से मरीजों को बहेतर से बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया होना चाहिए।

जिला अस्पताल शहडोल में 500 बेड की सुविधा के लिए शासन को प्रस्ताव प्रेषित किया जाए। उप मुख्यमंत्री ने जनप्रतिनिधियों के सुझाव पर जिला अस्पताल में पोस्टमार्टम भवन को डिस्मेंटल कर पोस्टमार्टम भवन के लिए नवीन प्रस्ताव तैयार करने के भी निर्देश अधिकारियों को दिए।

मेडिकल कॉलेज से भी मांगा प्रस्ताव: बैठक में उप मुख्यमंत्री ने मेडिकल कालेज शहडोल द्वारा मरीजो को दी जा रही सुविधाओं के संबंध में डीन मेडिकल कालेज से विस्तार पूर्वक जानकारी ली तथा डीन मेडिकल कालेज को निर्देश दिए कि मेडिकल कालेज शहडोल में सुविधाओं के विस्तार के लिए प्रस्ताव तैयार कर प्रेषित किया जाए।

जनप्रतिनिधियों की समस्या सुने अधिकारी: बैठक में उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जनप्रतिनिधियों की समस्याओं को सुने और प्राथमिकता के साथ उन समस्याओं का निराकरण कराएं। उन्होंने कहा कि जिले में आधे-अधूरे कार्यों की सूची बनाकर आधे-अधूरे कार्यों को शीघ्र पूर्ण कराए तथा जनप्रतिनिधियों से लोकार्पण कराएं।

बारिश से हुए नुकसान का सर्वे करें अधिकारी: बैठक में उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि अतिवर्षा के कारण हुए नुकसान का सर्वे कराएं तथा मुआवजे की राशि समय में लोगों को मिले यह सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि शहडोल नगर में सीवरेज कार्य अधूरा होने के कारण लोगों को काफी समस्याएं होती है। उन्होंने कहा कि सीवरेज के कार्य को गुणवत्तायुक्त पूर्ण कराएं।

सुने घर का टूटा ताला

ब्यौहारी नगर में अज्ञात चोरों ने सूने घर को बनाया निशाना, केस दर्ज कर जांच में जुटी पुलिस

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। ब्यौहारी थाना क्षेत्र अंतर्गत नगर में चोरी की एक वारदात सामने आई है। घर सूना था तभी चोरों ने लाखों की चोरी की वारदात को अंजाम दिया है। यह घटना बीती रात की बताई जा रही है। अज्ञात चोरों ने ताला तोड़कर सोने चांदी के जेवरात और नगद रुपयों की चोरी की हैं। पीड़ित आशा चतुर्वेदी जब कुछ दिनों बाद जब वापस अपने घर पहुंची तब उसे चोरी की जानकारी हुई। बुधवार को ब्यौहारी पुलिस मामला दर्ज कर पड़ताल में जुट गई है।

ब्यौहारी थाना क्षेत्र में इन दिनो चोरों की हौसले बुलंद हैं। आए दिन चोरी की वारदात हो रही हैं। पुलिस ने चोरों की तलाश शुरू कर दी है। महिला ने बताया कि घर में रखें कीमती सोने चांदी के जेवरात और कुछ नगद रुपए कर लेकर चोर फरार हो गए हैं।

थाना प्रभारी अरुण पांडे ने बताया कि महिला घर में नहीं थी, तभी चोरों ने इसका फायदा उठाया और सुने घर को अपना निशाना बनाते हुए ताला तोड़कर घर में रखे कीमती सोने चांदी के जेवरात एवं नगद रुपए लेकर चोर फरार हो गए हैं। महिला ने थाने में शिकायत दर्ज कराई है, अज्ञात चोरों के विरुद्ध हमने केस दर्ज किया है। चोरों की तलाश की जा रही है।

विचार

अब कोई नहीं कहता गरीबी में गीला आटा

इस बार सोच रहे थे कि इलेक्शन के टाइम थाली पर कम्पीटिशन होगा। पिछली दफे दो रुपये तक गिर गए थे एक थाली के भाव। मगर इस दफे सुनाई नहीं दी थाली। तीन साल पहले हम सबने थाली बजायी थी और कोरोना के वायरस को भगाने की कोशिश की थी। भाग तो गया दुष्ट। पर अब थाली को भूल गए हैं लोग। थाली की जगह ताली बजाने में लगे थे। ताली भी ऐसी वैसी नहीं चार सौ वाली। छप्पन प्रकार के व्यंजनों वाली। मगर उसमें दाल-रोटी ही मिल सकी। मगर अफसोस इस वक्त उस थाली की बात कोई भी नहीं कर रहा। हम तो सोच रहे थे कि चुनावी मौसम में दो रुपये से कम में उतरेगी। बोली लगेगी। पड़ोसी देश में खाली थाली बजी तो हमने ताली मारी थी। कारण कि आटे पर हायतौबा मची थी। कपड़े फाड़ प्रतियोगिता चल रही थी। बड़े-बड़े लाइन में लगे थे। मगर हमारे यहां तो भिखारी भी आटे-दाल की बात नहीं करते। सीधे पैसे की बात करते हैं। इशारों में बताते हैं-पहले पैसा फिर भगवान, बाबू दस-बीस रुपया देते जाना दान। अठन्नी-चवन्नी को कोई पहचानता तक नहीं। जब से देश की इकोनॉमी में बिलियन और ट्रिलियन आ गए हैं, गिनती भूल गए हैं लोग। वरना तो एक लाख तिजोरी में आते ही फूल के कुप्पा हो जाते थे। अब भिखारी के भी मंदिर के हिसाब से रेट हो गए हैं। इस बखत जिस मंदिर में ज्यादा रौनक है, वहां के रेट सबसे ज्यादा हैं। भिखारी वहां कटोरा थैले में रखता है और क्यूआर कोड सामने कर देता है। उसकी भी कोई इज्जत है और पैसा ट्रांसफर करने वाले की भी। भिखारी ने भी क्या धोबी पछाड़ मारी है? यह भी विकासशील भारत की तस्वीर का एक रंग है। क्यू-आर ने उसकी हैसियत बदल के रख दी है। आजकल भिखारी की तरह आम आदमी भी सोचने लगा है। मशहूर होने के जरिए तलाश रहा है। एक वक्त था जब टाटा और बाटा धुप्पल में मशहूर हो गए थे। कहते थे, देश का लोहा गला मशहूर टाटा हो गया, देश में जूता चला मशहूर बाटा हो गया। अब देख लो टाटाजी नोन तेल पर उतर आए हैं। और बाटा अभी तक जूते चप्पल ही बेच रहा है। वक्त के साथ बहुत कुछ बदल जाता है। समझने वाले को इशारा ही काफी होता है। कभी जिनके बाप-दादों के कपड़े लंदन जाते थे धुलने। अब उनकी औलादें मोची की दुकान के चक्कर काट रही हैं। सीना पिरोना सीख रही हैं।

छत्रपति प्रतिमा का ढहना शासन-तंत्र की भ्रष्टता का प्रमाण

ललित गर्ग

मराठा पहचान और परपरा के प्रतीक पुरुष, प्रथम हिन्दू नेता छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा हाल ही में की गयी 35 फीट ऊंची प्रतिमा का थरथरा कर गिर जाना राष्ट्रीय शर्म एवं प्रशासनिक भ्रष्टाचार का दुःखद अध्याय है। इस तरह हमारे एक महानायक की महान स्मृतियों से जुड़ी इस प्रतिमा का गिरना एवं ध्वस्त होना सरकार में गहरे पैठ चुके भ्रष्टाचार, लापरवाही एवं रिश्वतखोरी को उजागर करता है।

आजादी के अमृत-काल में पहुंचने के बाद भी भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, बेईमानी हमारी व्यवस्था में जिस तीव्रता से व्याप्त है, उसका यह एक ज्वलंत उदाहरण है, जो सरकार की साख को धुंधला रही है, यह घटना भारतीय नौसेना की साख को भी बट्टा लगा रही है, यह घटना इसलिए भी गंभीर चिंता की बात है कि इससे हमारे सार्वजनिक निर्माण कार्यों की गुणवत्ता की कलई खुल गई है। गौर कीजिए, इस प्रतिमा के निर्माण पर करीब 3,600 करोड़ रुपये की लागत आई थी और इसी 4 दिसंबर को नौसेना दिवस पर इसका अनावरण किया गया था। सिंधु दुर्ग में शिवाजी महाराज की इस प्रतिमा के गिर जाने से महाराष्ट्र की राजनीति में उबाल आना स्वाभाविक है, इससे लोगों का आहत होना भी उचित हैं। क्योंकि छत्रपति शिवाजी महाराज महाराष्ट्र के महानायक एवं जन-जन की आस्था के केन्द्र हैं। वे महाराष्ट्र के जीवन का अभिन्न अंग हैं एवं वहां की राजनीति उनके नाम के इर्द-गिर्द घूमती है। महाराष्ट्र ही नहीं सम्पूर्ण देश में शिवाजी महाराज के प्रशंसक हैं। मराठों के अस्तित्व एवं अस्मिता के वे प्राण रहे हैं, मराठों को उन्होंने ने ही लड़ना सिखाया, उनके जीवन को उन्नत बनाया। उन्होंने बिना किसी भेदभाव के महाराष्ट्र की सभी जातियों को एक भगवा झंडे के नीचे एकत्रित किया और मराठा साम्राज्य की स्थापना की। शिवाजी ने अपने राज्य-शासन में मानवीय नीतियां अपनाई थी जो किसी धर्म पर आधारित नहीं थी। महाराष्ट्र क्योंकि उनकी जन्मस्थली ही नहीं कर्मस्थली भी रहा इसलिए महाराष्ट्र की आबोहवा में वे आज भी जीवंत हैं। ऐसे महानायक की प्रतिमा के गिर जाने के बाद महाराष्ट्र की राजनीति में तूफान खड़ा हो गया है। मूर्ति का निर्माण और डिजाइन नौसेना ने तैयार किया था। कहा तो यही जा रहा है कि 45 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही हवाओं के कारण प्रतिमा टूटकर गिर गई। छत्रपति शिवाजी के महाराष्ट्र और मराठा संस्कृति के ही नहीं, बल्कि भारतीयता के प्रतीक एवं प्रेरणा पुरुष हैं। आम मराठी भावनात्मक रूप से उनसे जुड़ा है। ऐसे में, इस मूर्ति का ढहना राज्य की एकनाथ शिंदे सरकार एवं भारतीय नौसेना की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े करती है। चंद महीने बाद ही राज्य में विधानसभा चुनाव होने के कारण यह एक बड़ा राजनीतिक मुद्दा बनना निश्चित है। एक मजबूत विपक्षी पार्टी शिव सेना की पूरी राजनीति शिवाजी के शौर्य व आत्म-गौरव से प्रेरित है, एनसीपी शरद पवार, कांग्रेस सहित कई विपक्षी दलों ने एकनाथ शिंदे सरकार को निशाना बनाना शुरू कर दिया है और आरोप लगाया है कि छत्रपति शिवाजी का स्मारक चुनावों को देखते हुए जल्दबाजी में बनाया गया था और इस काम में गुणवत्ता को पूरी तरह से अनदेखा किया गया। प्रतिमा का ढह जाना छत्रपति शिवाजी का अपमान तो है ही और यह जाहिर है कि इसका काम घटिया गुणवत्ता का था। इसीलिये घटना को शिवाजी के अपमान के रूप में पेश किया जाने लगा है। चुनाव की सरगर्मियों के बीच शिवाजी की प्रतिमा का मुद्दा चर्चा में आ गया है। इस मुद्दे को वोट जुटाने के लिए असरदार हथियार के रूप में जरूर इस्तेमान किया जायेगा। लेकिन मूल प्रश्न है ऐसे भ्रष्टाचार को रोकने की दिशा में कब सार्थक प्रयास होंगे? राज्य की एकनाथ शिंदे सरकार को इस मामले में त्वरित कार्रवाई करके दोषियों को कड़ी सजा दिलानी चाहिए, ताकि न सिर्फ विपक्ष के आरोपों की धार को निस्तेज किया जा सके, बल्कि सार्वजनिक निर्माण में किसी किस्म की लापरवाही या उदासीनता बरतने वालों को भी यह संदेश मिल सके कि वे बख्शे नहीं जाएंगे। यह पहली घटना नहीं है, जिसमें किसी बड़ी निर्माण योजना की कमी इस तरह की भ्रष्ट एवं लापरवाही के रूप में उजागर हुई है। हमारे सार्वजनिक निर्माण कार्यों की गुणवत्ता बार-बार तार-तार होती रही है। मई 2023 में उज्जैन के महालोक कोरिडोर में लगी सप्तऋषियों की मूर्तियां भी इसी तरह आंधी-तूफान में धराशायी हो गई थीं। अयोध्या में भी सड़के ध्वस्त हो गयी थी। बिहार में एक पखवाड़े के भीतर लगभग एक दर्जन छोटे-बड़े पुलों के ध्वस्त होने की घटनाएं हैरान करने के साथ-साथ चिंतित करने वाली बनी हैं। दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर टर्मिनल-1 पर छत गिरने की घटना से भी हर कोई हैरान हुआ है। मुंबई में घाटकोपर का होर्डिंग गिरना 14 लोगों की मौत का कारण बना था। कहीं नई बनी सड़कें धंस हो जाती हैं तो कहीं नई सरकारी इमारतों में दरारे पड़ जाती है। इन मूर्तियों, पुलों, सड़कों एवं सार्वजनिक निर्माण के अन्य सरकारी निर्माणों के ध्वस्त होने की घटनाओं ने एक बार फिर यही साबित किया है कि निर्माण कार्यों में फैले व्यापक भ्रष्टाचार और शासन तंत्र में बैठे लोगों की मिलीभगत के बीच ईमानदारी, नैतिकता, जिम्मेदारी या संवेदनशीलता जैसी बातों की जगह नहीं है। आज हमारी व्यवस्था चरमरा गई है, दोषग्रस्त हो गई है। उसमें दुराग्रही इतना तेज चलते हैं कि ईमानदारी बहुत पीछे रह जाती है। जो सद्प्रयास किए जा रहे हैं, वे निष्फल हो रहे हैं। प्रतिमाएं हो या पुल-इनके गिरने से जितने पैसों की बर्बादी होती है, उसकी भरपाई आखिर किससे कराई जाएगी? जाहिर है, इनकी वजहों को समझने के लिए किसी मजबूत, पारदर्शी एवं निष्पक्ष तंत्र की जरूरत है। निर्माण सामग्रियों की गुणवत्ता से समझौता और राजनीतिक दबाव में जल्द से जल्द कार्य पूरा करने की प्रवृत्ति ने ऐसी दुर्घटनाओं की गति एवं मात्रा बढ़ाई है। इसके लिए समूचे तंत्र को अपनी कार्य-संस्कृति पर भी गौर करने की जरूरत है। शिवाजी की प्रतिमा के तेज हवा में यूं ढह जाने से हमें सबक सीखने की जरूरत है। सवाल है कि जब सरकार किसी कंपनी को ऐसे राष्ट्रीय महत्व के निर्माण की जिम्मेदारी सौंपती हैं, उससे पहले क्या गुणवत्ता की कसौटी पर पूरी निर्माण योजना, डिजाइन, प्रक्रिया, सामग्री, समय-सीमा और संपूर्णता को सुनिश्चित किया जाना जरूरी समझा जाता? देश में भ्रष्टाचार सर्वत्र व्याप्त है, विशेषत: राजनीतिक एवं प्रशासनिक भ्रष्टाचार ने देश के विकास को अवरूद्ध कर रखा है। यही कारण है कि पुल या दूसरे निर्माण-कार्यों के लिए रखे गए बजट का बड़ा हिस्सा कमीशन-रिश्वतखोरी की भेंट चढ़ जाता है। इसका सीधा असर निर्माण की गुणवत्ता पर पड़ता है। निर्माण घटिया होगा तो फिर उसके धराशायी होने की आशंका भी बनी रहती है। निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर निगरानी रखने की पारदर्शी नीति नियामक केन्द्र बनाने के साथ उस पर अमल भी जरूरी है। विकसित देशों में भी ऐसे हादसे होते हैं, लेकिन अंतर यह है कि भारत में ऐसे हादसों से सबक नहीं लिया जाता। यह प्रवृत्ति दुर्भाग्यपूर्ण है। विडम्बना देखिये कि ऐसे भ्रष्ट शिखरों को बचाने के लिये सरकार कितने सारे झूठ का सहारा लेती है। रणनीति में सभी अपने को चाणक्य बताने का प्रयास करते हैं पर चन्द्रगुप्त किसी के पास नहीं है। घोटालों और भ्रष्टाचार के लिए हल्ला उनके लिए राजनैतिक मुद्दा होता है, कोई नैतिक आग्रह नहीं। कारण अपने गिरेबार में तो सभी झांकते हैं वहां सभी को अपनी कमीज दागी नजर आती है, फिर भला भ्रष्टाचार से कौन निजात दिरायेगा? ऐसी व्यवस्था कब कायम होगी कि जिसे कोई रिश्वत छू नहीं सके, जिसको कोई सिफारिश प्रभावित नहीं कर सके और जिसकी कोई कीमत नहीं लगा सके। ईमानदारी अभिनय करके नहीं बताई जा सकती, उसे जीना पड़ता है कथनी और करनी की समानता के स्तर तक। आवश्यकता है, राजनीति के क्षेत्र में जब हम जन मुखातिब हों तो प्रामाणिकता का बिल्ला हमारे सीने पर हो। उसे घर पर रखकर न आएं। राजनीति के क्षेत्र में हमारा कुर्ता कबीर की चादर हो। तभी इन मूर्तियों, पुलों, निर्माण कार्यों का भर-भराकर गिरना बन्द होगा।

थाईलैंड में चीनी प्रभाव कम करने का समय

ओंकारेश्वर पांडेय

बैंकॉक भारतीयों का पसंदीदा पर्यटन स्थल है। नई दिल्ली से थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक जाने में महज चार-पाँच घंटे लगते हैं। अब यदि आप बैंकॉक जाएंगे, तो वहां आपका स्वागत थाईलैंड की सबसे युवा प्रधानमंत्री पैटॉन्गटर्न शिनावात्रा की सरकार करेगी। भारत और थाईलैंड के संबंध हजारों साल पुराने हैं। चाहे वह व्यापार हो, सांस्कृतिक आदान-प्रदान हो, या फिर सामरिक दृष्टिकोण से जुड़ी साझेदारी हो, दोनों देशों के बीच के संबंध अद्वितीय हैं। परंतु, वर्तमान समय में, थाईलैंड का झुकाव चीन की तरफ अधिक होता दिख रहा है, जो भारत के लिए एक चुनौती हो सकती है। भारतीयों के लिए थाईलैंड न केवल पर्यटन का एक लोकप्रिय केंद्र है, बल्कि ऐतिहासिक रूप से भी दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध गहरे रहे हैं। पैटॉन्गटर्न, जिन्हें %उंग इंग% के नाम से भी जाना जाता है, अपनी चाची यिंगलक शिनावात्रा के बाद प्रधानमंत्री बनने वाली थाईलैंड की दूसरी महिला नेता हैं। उनका चुनाव भारत के लिए उनके पिता प्रधानमंत्री थाक्सिन द्वारा स्थापित गर्मजोशी भरे संबंधों को और मजबूत करने का एक रणनीतिक अवसर है। थाई राजनीति का यह नया दौर ऐसे समय में आया है, जब भारत का व्यापक लक्ष्य दक्षिण पूर्व एशिया में चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करना है। उनके राजनीतिक कॅरियर का उदय एक विशेष रूप से अस्थिर राजनीतिक परिदृश्य के बीच हुआ, जब थाईलैंड में संवैधानिक अदालत ने उनके पूर्ववर्ती प्रधानमंत्री स्रेथा थविसिन को एक विवादास्पद कैबिनेट नियुक्ति के कारण पद से हटा दिया। थाईलैंड में सैन्य हस्तक्षेप और राजनीतिक अस्थिरता का लंबा इतिहास रहा है। 2006 और 2014 में हुए दो बार हुए सैन्य तख्तापलट ने देश की राजनीति को बुरी तरह प्रभावित किया। थाईलैंड की पहली महिला प्रधानमंत्री, यिंगलक शिनावात्रा, जो पैटॉन्गटर्न की चाची हैं, का कार्यकाल भी इसी अस्थिरता का शिकार हुआ। हालांकि, भारत के लिए इन घटनाओं के बीच एक रणनीतिक अवसर भी छिपा है। थाक्सिन शिनावात्रा और भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल 2001 से 2006 के दौरान भारत-थाईलैंड संबंधों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। आर्थिक-रणनीतिक सहयोग बढ़ा। मुक्त व्यापार समझौता हुआ, और संयुक्त सैन्य अभ्यास और द्विपक्षीय नौसैनिक रक्षा सहयोग भी शुरु हुआ। समुद्री सहयोग व कनेक्टिविटी बढ़ाने के अलावा भारत, म्यांमार और थाईलैंड के बीच त्रिपक्षीय राजमार्ग परियोजनाओं के माध्यम से दोनों देशों में उल्लेखनीय सहयोग देखा गया। भारत की स्वतंत्रता के बाद सन 1947-76 के दौरान भारत-थाई संबंध ठंडे रहे थे। 1970 के दशक तक थाईलैंड पर सैन्य शासकों का शासन था। 1986 में भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी की थाईलैंड यात्रा ने इस स्थिति को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1994 में शुरू हुई भारत की %लुक ईस्ट% नीति और थाईलैंड की %लुक वेस्ट% नीति ने द्विपक्षीय संबंधों को नया आयाम दिया। इसके बाद के वर्षों में, दोनों देशों ने अपने आर्थिक और सामरिक सहयोग को बढ़ाया। 2011 में थाक्सिन की बहन यिंगलक शिनावात्रा के प्रधानमंत्री बनने के बाद उनके कार्यकाल (2011-2014) के दौरान भारत और थाईलैंड के बीच कई महत्वपूर्ण समझौते हुए, जिनमें रक्षा, सुरक्षा, और व्यापार पर ध्यान केंद्रित किया गया। हालांकि, 2014 में यिंगलक शिनावात्रा को भी सत्ता से बेदखल कर दिया गया, और वह अब चीन में निर्वासित जीवन बिता रही हैं। इस बीच, थाईलैंड और चीन के संबंध मजबूत होते गए। थाईलैंड अब चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का हिस्सा है और दोनों देशों के बीच व्यापारिक और सैन्य सहयोग में भी तेजी आई है। चीन ने थाईलैंड में बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में बड़ा निवेश किया है, जैसे कि बैंकॉक को लाओस-चीन हाई स्पीड रेल से जोड़ने का प्रोजेक्ट। इसके अलावा, चीन ने थाईलैंड को 5त्न नेटवर्क स्थापित करने के लिए हुवावे जैसी कंपनियों के माध्यम से भी सहायता प्रदान की है। थाईलैंड में चीन का बढ़ता प्रभाव भारत ही नहीं अमरीका के लिए भी महत्वपूर्ण चुनौती है। शीत युद्ध के बाद से अमरीका थाईलैंड का प्राथमिक हथियार आपूर्तिकर्ता रहा, लेकिन यह स्थान अब चीन ने ले लिया है। चीन ने न केवल थाईलैंड के रक्षा क्षेत्र में अपने प्रभाव को बढ़ाया है, बल्कि थाईलैंड के साथ नियमित रूप से संयुक्त सैन्य अभ्यास भी किया है। इसके अलावा, थाईलैंड ने चीन से बड़ी संख्या में टैंक, बख्तरबंद वाहन, और पनडुब्बियाँ खरीदी हैं। चीन अब थाईलैंड का सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता बन गया है। 2023 में थाईलैंड में चीन का कुल निवेश 43त्न बढ़कर 23.79 अरब डॉलर पर पहुंच गया, जो थाईलैंड की अर्थव्यवस्था पर चीन के प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। भारत और थाईलैंड के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2023 में लगभग 14 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। हालांकि, इस व्यापार में भारत का हिस्सा कम है। थाईलैंड में भारत का मुख्य निर्यात कपड़ा, रत्न और फार्मास्यूटिकल्स हैं, जबकि थाईलैंड से भारत को आयात मुख्य रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य उपभोक्ता उत्पादों का है। भारत और थाईलैंड दोनों ही आसियान क्षेत्रीय मंच और एशिया सहयोग वार्ता जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर एक साथ काम करते हैं। भारत ने दक्षिणी थाईलैंड में इस्लामी अलगाववादियों से निपटने के लिए थाई लोगों की सहायता की, जिसके बदले थाईलैंड ने कंबोडिया में उत्पन्न होने वाले हथियारों की आपूर्ति के लिए उनकी जमीन का उपयोग करने वाले भारतीय अलगाववादियों के खिलाफ कार्रवाई की। 2006 से भारत-थाई नौसेनाओं की अंडमान सागर में प्रतीकात्मक समन्वित गश्त और जनवरी 2012 में रक्षा सहयोग के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर के बावजूद कहीं न कहीं दोनों देशों के सुरक्षा संबंध अपेक्षाकृत अविकसित ही हैं। कुल मिलाकर थाईलैंड में भारत चीन से पिछड़ रहा है। ऐसा तब है, जब दोनों देशों के संबंध हजारों साल पुराने हैं। थाई संस्कृति पर भारत का गहरा प्रभाव है। थाईलैंड बौद्ध धर्म को मानता है, जो भारत से उत्पन्न हुआ है। रामायण की हिंदू कहानी भी पूरे थाईलैंड में रामकियेन के नाम से प्रसिद्ध है। लगभग 2500 साल पहले जब सम्राट अशोक ने सुवर्णभूमि में भिक्षुओं को भेजा था, तब से लेकर आजतक थाईलैंड में भारतीय पुजारियों का स्वागत किया जाता रहा है। थाईलैंड की समुद्री सीमा भारत के अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के साथ जुड़ी है।

अनवर ढेबर पर कर्मचारी के घर गहने-पैसे चोरी का मामला

एक आरोपी ने का कोर्ट में सरेंडर, वीडियो कॉल में ऑर्डर देकर तोड़वाए थे ताले

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ शराब घोटाला मामले में जेल में बंद अनवर ढेबर पर अपने पूर्व कर्मचारी के घर चोरी करने का आरोप है। रायपुर की पुरानी बस्ती पुलिस ने अनवर ढेबर समेत चार लोगों को आरोपी बनाया है, जिनमें से एक आरोपी आसिफ अहमद खान उर्फ पापा ने मंगलवार को कोर्ट में सरेंडर कर दिया। कोर्ट से पुलिस को एक दिन की रिमांड मिली थी।

पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, आरोपी आसिफ अहमद ने रिमांड में पूछताछ में स्वीकार किया है कि वे कर्मचारी के घर के अंदर घुसे थे, लेकिन उसके पास चोरी की गई संपत्ति और दस्तावेज नहीं हैं। वह चोरी के बाद से फरार था।

आसिफ की बुधवार को एक दिन की पुलिस रिमांड खत्म हो गई। पुलिस इसे फिर एक बार कोर्ट में पेश करेगी।

चोरी का पूरा मामला: पुरानी बस्ती थाने में 28 जुलाई को मुंबई निवासी इरफान मेघजी ने एफआईआर दर्ज कराई। आरोप लगाया है कि वह 2016 में अनवर ढेबर के प्रोजेक्ट ढेबर बिल्डकॉन में काम करने के लिए आया था। उसे 2018 में भाठागांव स्थित ढेबर सिटी लोटस टावर में परिवार सहित रहने के लिए फ्लैट दिया गया था।

दिसंबर 2023 में इमरान काम छोड़कर मुंबई चला गया, लेकिन मेरा सामान फ्लैट में ही रखा था। इमरान ने पुलिस को बताया कि 30 मार्च की दोपहर ढेबर सिटी से एक स्टाफ ने उसे कॉल किया। जानकारी मिली कि मेरे घर में 3-4 लोग ताला तोड़कर घुसे हैं। पूछने पर पता चला कि सोहेल, पापा, निखिल खत्री मौजूद हैं, जबकि अनवर ढेबर वीडियो कॉल पर हैं।

आरोप है कि अनवर ने कॉल पर कहा कि घर में किसी भी हाल में घुसो, ताला तोड़ना पड़े तो तोड़ दो और जो भी सामान हो ले आओ। इसके बाद इमरान 15 अप्रैल को फ्लैट पर लौटा तो पता चला कि उसकी पत्नी की 6 सोने की नथनी, 18-20 हजार रुपए कैश, उसके निजी दस्तावेज, बच्चों के स्कूल सर्टिफिकेट गायब थे।

युवती से साइबर स्टॉकिंग का भी मामला है दर्ज: इमरान मेघजी ने दूसरी एफआईआर सिविल लाइन थाने में दर्ज कराई है। इसमें अनवर ढेबर के साथ ही उसके बेटे शोएब ढेबर और जुनैद ढेबर और एक अन्य को आरोपी बनाया गया है। इमरान ने बताया कि वह ढेबर के प्रोजेक्ट में सुपरवाइज़र के तौर पर काम करता था। जब वह काम छोड़कर चला गया तो उसे डरा-धमकाकर बुलाया गया।

चारों आरोपियों ने उससे मारपीट की और जान से मारने की धमकी दी। इमरान ने यह भी आरोप लगाया है कि धमकी देकर उससे किसी लड़की की साइबर स्टॉकिंग कराई गई। आरोप है कि लड़की के मोबाइल से जानकारी निकलवाने के लिए छेड़छाड़ की गई।

रेप से गभर्वती हुई युवती

शादी का झांसा देकर करता रहा दुष्कर्म, प्रेग्नेंट होने पर किया इनकार, पुलिस ने किया गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, सक्ती एजेंसी। छत्तीसगढ़ के सक्ती जिले में शादी का झांसा देकर दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया है। बताया जा रहा है कि दुष्कर्म से युवती गर्भवती हो गई। आरोपी को पता चला तो शादी करने से मना कर दिया। मामला मालखरौदा थाना क्षेत्र का है। जानकारी के अनुसार, पीड़िता ने 26 अगस्त 2024 को थाने में शिकायत दर्ज कराई। हसौद निवासी राजकुमार साहू (30) ने अगस्त 2023 से मार्च 2024 तक रेप किया। युवती ने कई बार युवक को शादी के लिए कहा, लेकिन शादी नहीं की। इससे परेशान होकर युवती थाने पहुंची।

पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार: मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस आरोपी को पकड़ने के लिए लगातार छापेमारी कर रही थी। इसी बीच मुखबिर से मिली सूचना के बाद आरोपी को हसौद से गिरफ्तार कर लिया।

कोर्ट ने आरोपी को भेजा जेल: पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक आरोपी को गिरफ्तार कर पूछताछ की गई। आरोपी ने जुर्म स्वीकार कर लिया है। आरोपी को कोर्ट में पेश किया गया, जहां से कोर्ट ने आरोपी को जेल भेज दिया है।

अवैध कब्जे पर चला बुलडोजर

सरकारी जमीन पर चला रहे थे ठेले-गुमटी, अब दुकानदारों के सामने रोजी-रोटी का संकट

मीडिया ऑडीटर, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही एजेंसी। छत्तीसगढ़ के गौरेला-पेंड्रा-मरवाही में अवैध कब्जाधारियों के खिलाफ जिला प्रशासन ने कार्रवाई की है। कई सालों से कलेक्टर कार्यालय और जिला अस्पताल के आसपास सरकारी जमीन पर अवैध कब्जाकर ठेला और गुमटी चला रहे थे, जिस पर प्रशासन ने बुलडोजर चलाया है।

रायगढ़ जिला अस्पताल के सामने सड़क किनारे अवैध अतिक्रमण के कारण यातायात प्रभावित हो रहा था, जिसकी लगातार शिकायत मिलने के बाद प्रशासन की टीम ने कार्रवाई की है। इससे पहले कई बार अवैध कब्जाधारियों को नोटिस दी गई थी। इसके बावजूद अवैध कब्जाधारियों ने अपना अतिक्रमण नहीं हटाया।

दुकानदारों के सामने रोजी-रोटी का संकट: इसके बाद गौरेला तहसीलदार अविनाश कुजूर और उनकी टीम ने अवैध अतिक्रमण को हटा दिया है। अवैध अतिक्रमण हटने के बाद इस मार्ग से गुजरने वाले राहगीरों ने राहत की सांस ली है।

ट्रेन की टक्कर से युवक की मौत

कान में एयरफोन लगाकर क्रॉस कर रहा था पटरी, कुचलते निकल गई पैसेंजर गाड़ी

मीडिया ऑडीटर, बालोद एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बालोद में पैसेंजर ट्रेन की चपेट में आने से 18 वर्षीय युवक की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि हादसा गुंडरदेही चैनगंज रेलवे फाटक से करीब 500 मीटर की दूरी पर हुआ। पूरी घटना गुंडरदेही थाना क्षेत्र की है।

मिली जानकारी के मुताबिक मरने वाला का नाम जिज्ञासु देवांगन है, जो ग्राम परसाही का निवासी था। गुंडरदेही चैनगंज रेलवे फाटक के पास कान में एयरफोन लगाकर पटरी क्रॉस कर रहा था। इसी दौरान दुर्ग से दल्लीराजहरा की ओर जा रही पैसेंजर ट्रेन की चपेट में आ गया।

सिर और हाथ पैर में गंभीर चोंटे आई: गुंडरदेही चैनगंज के गेटकीपर जामलाल पदोती ने बताया कि 11 बजे पैसेंजर ट्रेन आ रही थी, तब फाटक बंद था। ट्रेन रुकने के बाद पता चला कि कोई ट्रेन के सामने आ गया है। जाकर देखने पर पता चला कि सिर और हाथ पैर में गंभीर चोंटे आई है।

मौके पर पहुंची पुलिस की टीम: स्थानीय लोगों ने बताया कि पुलिस और एंबुलेंस को सूचना दी गई, जिसके बाद घायल को संजीवनी 108 के माध्यम से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गुंडरदेही लाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

पुलिस मामले की कर रही जांच: पुलिस ने बताया कि मृतक की लाश को गुंडरदेही सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के मॉर्च्युरी में रखा गया है। मृतक के परिजनों को हादसे की सूचना दे दी गई है। पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को शव सौंप दिया। जाएगा मामले की जांच जारी है।

ट्रक से टकराई तेज रफ्तार बस

4 यात्री गंभीर रूप से घायल, ओवरटेक करने के चक्कर में हुआ हादसा

मीडिया ऑडीटर, बालोद एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बालोद में नेशनल हाईवे-30 पर ओवरटेक करने के चक्कर में बस ने ट्रक को पीछे टक्कर मार दी। हादसे में बस में सवार चार यात्री बुरी तरह घायल हो गए, जिन्हें नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया है। जहां सभी का इलाज किया जा रहा है।

घटना पुरूर थाना क्षेत्र की है। हादसे की सूचना मिलते ही थाना प्रभारी शिशुपाल सिंह घटनास्थल पर पहुंचे। उन्होंने बताया कि घटना में चार लोग घायल हैं। मामले की जांच की जा रही है। फिलहाल, यात्रियों को सुरक्षित बस से निकाल लिया गया है।

पहले भी हो चुके हैं कई हादसे: मरकाटोला घाट हादसों का केंद्र बिंदु बना हुआ है। यह बस्तर अंचल को राजधानी रायपुर से जोड़ने का प्रमुख मार्ग है। इसलिए यहां यातायात का भी काफी दबाव रहता है।

यहां हादसों में कई लोगों की मौत हो चुकी है। हालांकि, पुलिस की ओर से समय-समय पर जागरूकता अभियान चलाया जाता है और पेट्रोलिंग भी की जाती है।

सब-इंस्पेक्टर अभ्यर्थियों ने मांगी इच्छा मृत्यु

गृहमंत्री के बगंले के बाहर कर रहे प्रदर्शन, बढ़ाई गई सुरक्षा व्यवस्था, 2018 में हुई थी परीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। रायपुर में सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा-2018 के अभ्यर्थियों ने बुधवार को गृहमंत्री विजय शर्मा के बंगले के बाहर प्रदर्शन कर इच्छामृत्यु की मांग की। प्रदेशभर से सैकड़ों अभ्यर्थी रिजल्ट जारी करने की मांग कर रहे हैं। परीक्षा होने के 6 साल बाद भी परिणाम जारी नहीं किया गया है।

अभ्यर्थी अपने हाथों में 'स्ढ़ रिजल्ट जारी करें या इच्छा मृत्यु दें' लिखा तख्ती लेकर बैठे हैं। अभ्यर्थियों का कहना है कि, रिजल्ट के इंतजार में 6 साल बीत गया। अब सरकार साफ करे कि वो रिजल्ट जारी करेगी या नहीं। अगर सरकार रिजल्ट जारी नहीं कर रही है, तो हमें इच्छा मृत्यु दे दें।

गृहमंत्री के बंगले की बढ़ाई गई सुरक्षा: बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों के पहुंचने के बाद गृहमंत्री विजय शर्मा के सिविल लाइन स्थित बंगले की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। साथ ही एक्स्ट्रा पुलिस बल की भी तैनाती की गई है। ये परीक्षार्थी लंबे समय से आंदोलनों के जरिए रिजल्ट जारी करने की मांग कर रहे हैं।

2018 में हुई थी परीक्षा: यह परीक्षा साल 2018 में शुरू हुई थी, लेकिन 6 साल बाद भी अब तक कोई भी परिणाम जारी नहीं किया गया है। 300 से अधिक अभ्यर्थी आज राजधानी के सड़कों पर कैंडल मार्च कर रहे हैं।

सभी अभ्यर्थियों का कहना है कि, इसके बावजूद भी सरकार और प्रशासन ने कोई सुध नहीं लिया तो बड़ा आंदोलन होगा।

जिले में अब तक 904.9 मिमी औसत वर्षा की गयी दर्ज

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में 01 जून से 28 अगस्त 2024 तक 904.9 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गई है। कार्यालय कलेक्टर भू-अभिलेख शाखा से प्राप्त जानकारी के अनुसार 1 जून से अब तक सर्वाधिक वर्षा 1045.4 मिमी मनेन्द्रगढ़ तहसील में तथा न्यूनतम 805.2 मिमी खड़गवां तहसील में दर्ज की गई है। इसके अलावा तहसील केल्हारी में 998.2 मिमी, तहसील चिरमिरी में 863.8 मिमी, तहसील कोटाडोल में 888.4 मिमी, तहसील भरतपुर में 828.6 मिमी तथा तहसील खड़गवां में 805.2 मिली मीटर वर्षा दर्ज की गई है।

कार ने 5 को कुचला..2 की मौत

सीएसईबी कर्मी के बेटे ने दो बाइक सवारों पर चढ़ाई गाड़ी, 3 घायल

मीडिया ऑडीटर, कोरबा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में तेज रफ्तार कार एक के बाद एक दो बाइक सवारों को कुचलकर निकल गई, जिससे 2 लोगों की मौत हो गई। वहीं 3 की हालत नाजुक है। हादसे के बाद ड्राइवर ने थाने में जाकर सरेंडर कर दिया। आरोपी सीएसई कर्मी का बेटा है। पूरा मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र का है।

मरने वाले में एक मनोज गिरी है, जो रामपुर का रहने वाला था, जबकि दूसरे का नाम शिवकुमार है, जो निहारिका क्षेत्र का रहने वाला था।

वहीं दूसरी बाइक पर सवार तीन लोग घायल हैं, जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। तीनों की हालत गंभीर है। ये हादसा वहां लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गया।

हादसे के बाद मची चीख पुकार: पुलिस के मुताबिक मंगलवार रात करीब 9 बजे तेज रफ्तार कार निहारिका की ओर से कोसाबाड़ी की तरफ जा रही थी। इस दौरान एक के बाद एक बाइक सवारों को कुचलती गई। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई। वहीं भीड़ एकत्रित हो गई।

2 लोगों को डॉक्टर्स ने मृत घोषित कर दिया: इस दौरान राहगीरों की मदद से सभी को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन 2 लोगों को डॉक्टर्स ने मृत घोषित कर दिया। वहीं तीन लोगों का जिला मेडिकल कॉलेज अस्पताल में इलाज चल रहा है।

नशे में था आरोपी या नहीं, जांच कराई गई: कोरबा **स्राजस्थान पत्रिका** के मुताबिक आरोपी से पूछताछ की जा रही है। वो नशे में था या नहीं उसकी जांच कराई गई है। मेडिकल रिपोर्ट आने के बाद ही कुछ कह पाएंगे।

महिला फॉरेस्ट गार्ड का रिश्वत लेते वीडियों वायरल

जब्त ट्रैक्टर को छोड़ने मांगे डेढ़ लाख, पैसे नहीं देने पर जेल भेजने की धमकी

मीडिया ऑडीटर, बलरामपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले में महिला वनरक्षक का रिश्वत लेने का वीडियो सामने आया है। फॉरेस्ट गार्ड ने जब्त ट्रैक्टर को छोड़ने के एवज में डेढ़ लाख रुपए रिश्वत मांगी थी। पैसे नहीं देने पर वाहन जब्त कर जेल भेजने की धमकी भी दी गई, फिर सौदा 60 हजार में तय हुआ था।

वीडियो 8 जुलाई का बताया जा रहा है। मामला राजपुर वन परिक्षेत्र के ओकरा बीट का है। अमदरी वन भूमि पर ट्रैक्टर से जुताई करते समय वन विभाग की टीम ने वाहन को जब्त किया था। लोगों ने कलेक्टर, एफआईआर और थाना प्रभारी राजपुर को ज्ञापन सौंपकर कार्रवाई की मांग की है। वहीं वन अधिकारी वीडियो को प्रायोजित बता रहे हैं।

सरकारी जमीन पर वाहन खड़े करने का आरोप: शिकायत के मुताबिक, यह घटना 8 जुलाई की है। ग्राम अमदरी के 47 साल के विद्यासागर गुप्ता ने शिकायत में बताया कि कोरगी में वन भूमि 75 डिसमिल का पट्टा, 27 फरवरी 2021 को छत्तीसगढ़ शासन से मिला है।

शासन से मिली वनभूमि पर खेती करने के लिए गया था। जमीन की जुताई करने के बाद अपने घर के पास स्थित अपनी पैतृक भूमि पर ट्रैक्टर लेकर खड़ा था। इस दौरान वन अमला पहुंचा और सरकारी जमीन पर वाहन खड़े करने का आरोप लगाते हुए ट्रैक्टर जब्त कर लिया।

10 हजार रुपए ऑनलाइन ट्रांसफर भी किए: ट्रैक्टर मालिक के मुताबिक फॉरेस्ट गार्ड को उसने बताया कि उसके पास डेढ़ लाख रुपए नहीं है। इसके बाद 60 हजार रुपए में डील हुई। विद्यासागर ने 10 हजार रुपए ऑनलाइन भी उसे ट्रांसफर किए। वहीं 20 हजार रुपए कैश लेकर वह फॉरेस्ट गार्ड सुनीता कुजूर की गाड़ी के पास पहुंचा था। इसी दौरान यह वीडियो बनाया गया है।

सादे कागज में साइन भी कराई: शिकायत में यह भी लिखा गया है कि, तीन सादे कागज में भी साइन ली गई है। घटना के अगले दिन शिकायतकर्ता की माता का निधन हो गया था। इसके चलते वह सही समय पर आवेदन नहीं दे सका। वहीं मामले में वन परिक्षेत्र अधिकारी महाजन साहू ने बताया कि शिकायत के आधार पर स्ढ़ फॉरेस्ट जांच कर रहे हैं। शुरुआती जांच में मामला प्रायोजित नजर आ रहा है। जांच के बाद ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

लोको शेड में छात्र पर गिरा क्रेन का रोप

अप्रेन्टिस स्टूडेंट्स और ट्रेनी टेक्नीशियनों ने काम किया बंद, रेलवे के खिलाफ नारेबाजी

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर निप्र। रेलवे लोको शेड में हादसा हुआ, जिसमें एक क्रेन का रोप टूटकर नीचे गिर गया। हादसे में एक अप्रेन्टिस छात्र गंभीर रूप से घायल हो गया है। घायल छात्र को तुरंत नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया। हादसे के बाद अप्रेन्टिस छात्रों और ट्रेनी टेक्नीशियनों में आक्रोश है। उन्होंने लोको शेड में काम बंद कर दिया है। अप्रेन्टिस छात्रों और ट्रेनी टेक्नीशियनों ने रेलवे प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए सुरक्षा की बेहतर व्यवस्था की मांग की है। उनका कहना है कि लोको शेड में सुरक्षा मानकों की अनदेखी की जा रही है, जिसके चलते यह हादसा हुआ है।

कोलकाता रेप-मर्डर केस, संदीप घोष की आईएमए मेंबरशिप सस्पेंड

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोलकाता के आरजी कर रेप-मर्डर को लेकर देशभर में प्रदर्शन हो रहे हैं। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने संदीप घोष की सदस्यता सस्पेंड कर दी है। आईएमए के प्रेसिडेंट डॉ. वी अशोकन ने बुधवार (28 अगस्त) को ये जानकारी दी। संदीप, आरजी कर मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल के प्रिंसिपल थे। इस बीच, केंद्र सरकार ने सभी राज्यों के मुख्य सचिवों और पुलिस प्रमुख को लेटर लिखा है। इसमें कहा है कि अस्पताल में नाइट पेट्रोलिंग और आने-जाने वाले लोगों की पहुंच को नियंत्रित करने की जरूरत है। केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव अपूर्व चंद्र ने 23 अगस्त को राज्यों के आला अफसरों को चिट्ठी लिखी थी। इसमें देशभर के मेडिकल इंस्टीट्यूशंस में हिंसा और कोलकाता रेप-मर्डर केस को लेकर चिंता जताई गई है। अब गोवा सरकार ने डॉक्टर, अस्पतालों की सुरक्षा को लेकर टास्क फोर्स का गठन किया है। इसमें 27 सदस्य होंगे।

कोलकाता रेप-मर्डर केस, बंगाल बंद में हिंसा

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता में ट्रेनी डॉक्टर के रेप-मर्डर केस में छात्र संगठनों के प्रोटेस्ट मार्च के बाद भाजपा ने बुधवार (28 अगस्त) को 12 घंटे का बंगाल बंद बुलाया था। बंद के दौरान कई जिलों में पुलिस और भाजपा समर्थकों के बीच झड़प हुई। कई नेताओं-वर्कर्स को हिरासत में लिया गया है। नॉर्थ 24 परगना जिले के भाटपारा में भाजपा नेता प्रियंगु पांडे की कार पर फायरिंग हुई। प्रियंगु ने बताया- टीएमसी के लगभग 50-60 लोगों ने हमला किया। गाड़ी पर 6-7 राउंड फायरिंग की और बम फेंके गए। ड्राइवर समेत दो लोगों को गोली लगी है। एक गंभीर है। नादिया और मंगलबाड़ी चौरंगी में भाजपा और टीएमसी कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हुई। टीएमसी समर्थकों ने भाजपाइयों पर लाठी-डंडे से हमला किया। बनगांव और बारासात दक्षिण में ट्रेनें रोकी गईं। भाजपा 27 अगस्त को कोलकाता में छात्र प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज और उन्हें हिरासत में लेने का विरोध कर रही है। बंगाल बंद पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि सीबीआई को रेप-मर्डर केस की जांच सौंपे 16 दिन बीत गए हैं। कहां है न्याय? ईडी ने कहा- भाजपा बंगाल को बदनाम कर रही है। भाजपा ने कभी भी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और मणिपुर के मुख्यमंत्रियों के इस्तीफे की मांग नहीं की।

भारत की दूसरी न्यूक्लियर सबमरीन अरिघात बनकर तैयार

नई दिल्ली (एजेंसी)। अरिघात आईएनएस अरिहंत का अपग्रेडेड वर्जन है। इसे विशाखापत्तनम में भारतीय नौसेना के शिप बिल्डिंग सेंटर में बनाया गया। भारत की दूसरी न्यूक्लियर सबमरीन अरिघात बनकर तैयार है। इसे कल यानी (29 अगस्त) को इंडियन नेवी को सौंपा जा सकता है। अरिघात को 2017 में लॉन्च किया गया था। तब से इसकी टेस्टिंग जारी रही। अब फाइनली इसे कमीशन किया जाएगा। अरिघात आईएनएस अरिहंत का अपग्रेडेड वर्जन है। इसे विशाखापत्तनम में भारतीय नौसेना के शिप बिल्डिंग सेंटर) में बनाया गया था।

अरिहंत की तरह ही अरिघात भी 750 किलोमीटर की रेंज वाली के-15 मिसाइलों से लैस होगी। इस सबमरीन का वजन 6 हजार टन (60 हजार क्विंटल) है। भारतीय नौसेना अब तक 3 न्यूक्लियर सबमरीन तैयार कर चुकी है। इसमें से एक अरिहंत कमीशंड है, दूसरी अरिघात मिलने वाली है और तीसरी S3 पर टेस्टिंग जारी है। इन सबमरीन के जरिए दुश्मन देशों पर परमाणु मिसाइल दागी जा सकती हैं। 2009 में पहली बार सांकेतिक तौर पर पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की पत्नी ने कारगिल विजय दिवस के मौके पर आईएनएस अरिहंत को लॉन्च किया था। इसके बाद 2016 में इसे नौसेना के बेड़े में शामिल किया गया। अगले 5 साल में दो और पनडुब्बियों को भारतीय नौसेना ने लॉन्च किया है।

सुनीता विलियम्स की मां बोलीं- बेटी के लिए परेशान नहीं, वह अनुभवी एस्ट्रोनॉट, जानती है क्या करना है

अमेरिका (एजेंसी)। भारतीय मूल की एस्ट्रोनॉट सुनीता विलियम्स करीब 85 दिनों से अंतरिक्ष में फंसी हुई हैं। इस बीच उनकी मां बोनी पांड्या ने कहा कि वह अपनी बेटी के धरती पर लौटने में हो रही देरी को लेकर चिंतित नहीं हैं।

अमेरिकी टीवी नेटवर्क न्यूज नेशन के होस्ट एंड्रयू क्योमो को दिए इंटरव्यू में बोनी ने कहा, "सुनीता एक अनुभवी अंतरिक्ष यात्री हैं। मैं उन्हें कोई सलाह नहीं देती हूं। वह जानती है कि उसे क्या करना है। वह 400 दिनों तक भी अंतरिक्ष में रह चुकी है। सुनीता और बुच विल्मोर इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (ISS) में हैं और उनके पास वहां बहुत काम हैं।" बोनी ने कहा, "नासा की टीम यह तय करना चाहती है कि सुनीता की वापसी पूरी तरह से सुरक्षित हो। इसी वजह से इसमें समय लग रहा है। मैंने 2 दिन पहले ही उससे बात की थी। उसने कहा है कि चिंता की कोई बात नहीं है। सब कुछ ठीक से चल रहा है।"

बेटी की अंतरिक्ष यात्रा के दौरान मां बोनी ने लिखी किताब : एक एस्ट्रोनॉट की मां के तौर पर अपने अनुभव पर बात करते हुए बोनी ने कहा, "मैं 20 साल से एक अंतरिक्ष यात्री की मां हूं। यह सुनीता की तीसरी अंतरिक्ष यात्रा है।" सुनीता विलियम्स की स्पेस यात्रा के दौरान 2022 में बोनी ने लिटिल टेल, बिग टेल्स नाम से एक किताब भी लिखी थी।

दूसरी तरफ, नासा ने बताया कि सुनीता और बुच के लिए ISS में सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। वहां खाने और ऑक्सीजन की भी पर्याप्त मात्रा है। हाल ही में 2 स्पेसक्राफ्ट के जरिए 8200 पाउंड का खाना, फ्यूल और दूसरी जरूरी चीजों के अलावा 3 टन का कार्गो ISS भेजा गया है।

राज्यपाल की कुशलक्षेम की जानकारी लेने मुख्यमंत्री एम्स भोपाल पहुँचे

भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल की कुशलक्षेम की जानकारी लेने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) भोपाल पहुँचे। मुख्यमंत्री ने एम्स परिसर में मीडिया प्रतिनिधियों से चर्चा में बताया कि राज्यपाल श्री पटेल वायरल फीवर के कारण 2 दिन पहले इलाज के लिए एम्स भोपाल आए थे। अब उनका स्वास्थ्य बेहतर है और वे शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ के बाद अपने निवास पहुँचेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एम्स भोपाल की ओपीडी में मौजूद मरीजों और उनके परिजन से भी कुशलक्षेम पूछी और संस्थान की व्यवस्थाओं तथा मिल रही सुविधाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एम्स भोपाल की व्यवस्थाओं के संबंध में संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि संस्थान के संचालक और समस्त स्टॉफ सेवा भाव से कार्य कर रहे हैं। इसी का परिणाम है कि केंद्र सरकार द्वारा भोपाल को एम्स के रूप में दी गई सौगात के प्रति जन-सामान्य का विश्वास और भरोसा दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। पात्र मरीजों को आयुष्मान कार्ड का भी यहां लाभ मिल रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में स्वास्थ्य सेवाओं में निरंतर सुधार हो रहा है, इसके लिए हम सब उनके आभारी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एम्स भोपाल के कुशल संचालन के लिए वहां के समस्त डॉक्टर और स्टॉफ को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

कोलकाता रेप-मर्डर, राष्ट्रपति बोलीं- बस बहुत हुआ

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोलकाता में ट्रेनी डॉक्टर से रेप-मर्डर केस के 20 दिन बाद राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का पहला बयान आया है। उन्होंने कहा, मैं घटना को लेकर निराश और डरी हुई हूं। अब बहुत हो चुका। समाज को ऐसी घटनाओं को भूलने की खराब आदत है।राष्ट्रपति मुर्मू ने 'विमेंस सेफ्टी- एनफ इज एनफ' नाम से एक आर्टिकल लिखा था, जिस पर उन्होंने मंगलवार (27 अगस्त) को पीटीआई के एडिटर्स से चर्चा की। उन्होंने कहा कि कोई भी

सभ्य समाज अपनी बेटियों और बहनों पर इस तरह के अत्याचारों की इजाजत नहीं दे सकता। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में 8-9 अगस्त की रात 31 साल की ट्रेनी डॉक्टर का रेप-मर्डर हुआ था। उनका शव सेमिनार हॉल में मिला था। उनकी गर्दन टूटी हुई थी। मुंह, आंखों और प्राइवेट पार्ट्स से खून बह रहा था। राष्ट्रपति ने लिखा- कोलकाता में हुई डॉक्टर के रेप और मर्डर की घटना से देश सकते में है। जब मैंने इसके बारे में सुना तो मैं निराश और भयभीत हुई। ज्यादा दुखद बात यह है कि यह घटना अकेली घटना नहीं है। यह महिलाओं के खिलाफ अपराध का एक हिस्सा है।

ममता बोलीं- बंगाल जला तो यूपी बिहार-असम भी जलेंगे

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बुधवार को पीएम मोदी पर बंगाल में आग लगवाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि अगर बंगाल में आग लगी तो असम से लेकर दिल्ली तक जाएगी और पीएम की कुर्सी गिर जाएगी। इसके जवाब में असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने उन पर निशाना साधते हुए कहा कि आपकी असम को डराने की हिम्मत कैसे हुई? वहीं, केंद्रीय मंत्री और पश्चिम बंगाल के भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने ममता के बयान को लेकर गृह मंत्री अमित शाह को चिट्?ठी लिखी है। इसमें उन्होंने कहा कि ऐसा बयान किसी संवैधानिक पद पर बैठा व्यक्ति नहीं दे सकता है। यह राष्ट्र-विरोधी की आवाज है। उनका बयान लोगों को धमकाने, हिंसा भड़काने और लोगों के बीच नफरत फैलाने का प्रयास है। उन्हें तुरंत इस्तीफा देना चाहिए। ममता ने कोलकाता की एक रैली में कहा था कि कुछ लोगों को लगता है कि यह बांग्लादेश है। मुझे बांग्लादेश से प्यार है। वे हमारी तरह बात करते हैं और हमारी संस्कृति भी एक जैसी है।

महबूबा मुफ्ती विधानसभा चुनाव नहीं लड़ेंगी

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी ने 17 सीटों पर प्रत्याशियों की दूसरी लिस्ट जारी कर दी है। इससे पहले 22 अगस्त को 8 उम्मीदवारों की सूची जारी की गई थी। इसमें पार्टी प्रमुख महबूबा मुफ्ती की बेटी इल्तिजा का नाम भी था। दूसरी लिस्ट जारी होने के कुछ देर बाद महबूबा ने विधानसभा चुनाव नहीं लड़ने का ऐलान किया। महबूबा इस साल हुए लोकसभा चुनाव में अनंतनाग से मैदान में थीं, लेकिन उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। जम्मू-कश्मीर में 18 सितंबर को पहले चरण की वोटिंग होगी। 27 अगस्त को नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि थी। चुनाव आयोग के मुताबिक, सात जिलों के 24 विधानसभा क्षेत्रों में 279 उम्मीदवारों ने अपने नामांकन पत्र दाखिल किए हैं। अनंतनाग जिले में कुल 72 उम्मीदवारों ने अपना नामांकन दाखिल किया है। इसके बाद पुलवामा जिले में 55, डोडा जिले में 41, किश्तवाड़ में 32, शोपियां में 28, कुलगाम में 28, जबकि रामबन में 23 उम्मीदवारों ने नामांकन दाखिल किया है। चुनाव आयोग ने बुधवार को जेल में बंद सर्जन बरकती, डॉ. अब्दुल बारी और 24

अन्य उम्मीदवारों के नामांकन फॉर्म खारिज किए हैं। पहले चरण के चुनाव में 23.27 लाख से अधिक मतदाता वोट डालेंगे। जिनमें से 11.76 लाख पुरुष मतदाता और 11.51 लाख महिला मतदाता हैं, साथ ही 60 थर्ड जेंडर वोटर्स हैं। जम्मू-कश्मीर की 90 सीटों के लिए 18 सितंबर से 1 अक्टूबर के बीच 3 चरणों में मतदान होंगे। नतीजे 4 अक्टूबर 2024 को आएंगे। सरकार बनाने के लिए बहुमत का आंकड़ा 46 है।

कश्मीर में बादल फटने से 3 की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरात के 13 जिलों में पिछले 24 घंटे में 200 मिमी से ज्यादा बारिश हुई। 18 जिलों में बाढ़ के हालात हैं, 5 जिलों राजकोट, आणंद, मोरबी, खेड़ा, वडोदरा और द्वारका में सेना को तैनात किया गया है। गुजरात में बाढ़-बारिश के चलते पिछले 3 दिनों में 15 लोगों की मौत हो गई। 23 हजार लोगों को रेस्क्यू किया गया है। 50 ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं। अहमदाबाद, राजकोट, बोटाद, आणंद, खेड़ा, महिसागर, कराच और मोरबी में प्राइमरी-सेकेंडरी स्कूलों और कॉलेजों में छुट्टी कर दी गई है। बुधवार और गुरुवार को सौराष्ट्र और कच्छ में बेहद भारी बारिश का अनुमान है।

शिवाजी की मूर्ति गिरने पर शरद बोले- ये गंभीर मामला

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई में शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे के घर मातोश्री पर महा विकास अघाड़ी की बुधवार (28 अगस्त) को बैठक हुई। इसमें एनसीपी (एसपी) प्रमुख शरद पवार, महाराष्ट्र कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले भी शामिल हुए। बैठक के बाद तीनों पार्टियों के नेताओं ने संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उद्धव ठाकरे ने कहा कि भगत सिंह कोश्यारी समुद्र किनारे राजभवन में रहते थे, उनकी टोपी कभी नहीं उड़ी। शिवाजी महाराज की मूर्ति हवा से कैसे गिर गई। राज्य में भ्रष्टाचार से लिप्त सरकार चल रही है। स्मारक के काम में करोड़ों का भ्रष्टाचार हुआ है। इसे फिर से बनाने के नाम पर करोड़ों का

भ्रष्टाचार होगा। कामकाज में कीड़े लग गए हैं। मैं इन्हें ?शिवद्रोही कहूंगा। उद्धव ने कहा कि महिला सुरक्षा को लेकर हमने दो-तीन दिन पहले बंद का आवाहन किया था, लेकिन के कोर्ट आदेश के कारण ये नहीं हो सका। अब 1 सितंबर को एमवीए का मुंबई के हुतात्मा चौक पर आंदोलन होगा। शरद पवार ने कहा कि राज्य सरकार जिम्मेदारी से भाग नहीं सकती। ये गंभीर मामला है इसमें राजनीति क्या है। वहीं, नाना पटोले ने कहा कि पीएम मोदी को शिवाजी महाराज की तरह टोपी पहनाई। शिवाजी महाराज की तुलना पीएम मोदी से कर रहे हैं। ये महाराष्ट्र का अपमान है। जनता में गुस्सा है। ये शिवद्रोही लोग हैं। शरद पवार- महाराष्ट्र में कही भी मूर्ति लगानी हो राज्य सरकार की इजाजत लेनी होती है। कहीं कोई भी पुतला लगे उसकी जिम्मेदारी राज्य सरकार की होती है। राज्य सरकार जिम्मेदारी से भाग नहीं सकती। ये गंभीर मामला है इसमें राजनीति क्या है।

देश में जोधपुर-आगरा समेत 12 औद्योगिक स्मार्ट शहर बनेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के 9 राज्यों में 12औद्योगिक स्मार्ट शहर तैयार किए जाएंगे। इसके अलावा, 10 राज्यों में 6 कॉरिडोर बनेंगे। पीएम नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति ने बुधवार, 28 अगस्त को इसकी मंजूरी दी। 12 औद्योगिक स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत 10 लाख लोगों को प्रत्यक्ष तौर पर और 30 लाख लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार मिलने की संभावना है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि प्रोजेक्ट की कुल लागत 28,602 करोड़

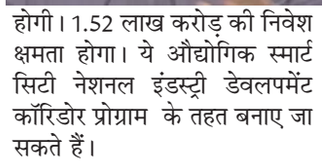

होगी। 1.52 लाख करोड़ की निवेश क्षमता होगा। ये औद्योगिक स्मार्ट सिटी नेशनल इंडस्ट्री डेवलपमेंट कॉरिडोर प्रोग्राम के तहत बनाए जा सकते हैं।

भारत ने 73 हजार अमेरिकी राइफल्स का ऑर्डर दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने अमेरिका से 73,000 सिग सॉ असॉल्ट राइफल्स का दूसरा ऑर्डर दिया है। सिग सॉ ने यह जानकारी दी है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस डील को भारत ने 837 करोड़ रुपए में साइन किया है। इससे पहले फरवरी 2019 में फास्ट-ट्रैक खरीद के तहत भारत ने 647 करोड़ रुपए में 72,400 एसआईजी-716 राइफल्स का ऑर्डर दिया था। राइफल्स की दूसरी खरीद को दिसंबर 2023 में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अगुआई में डिफेंस एक्विजिशन काउंसिल ने मंजूरी दी थी। इसकी डिलीवरी के बाद

भारतीय सेना के पास 1.45 लाख से ज्यादा एके-716 असॉल्ट राइफल्स हो जाएंगी। 2018-19 में राइफल्स की बढ़ती जरूरत के लिए भारत ने रूस से एके-203 राइफल्स का ऑर्डर दिया था, लेकिन इनके मिलने में देरी के चलते भारत ने फरवरी 2019 में अमेरिकी फर्म सिग सॉ से डील की थी। पहले लॉट में आईं 72,400 राइफल्स से सेना को 66,400, एयरफोर्स को 4,000 और नेवी को 2,000 राइफल्स दी गई थीं।

नारायण राणे और आदित्य ठाकरे के समर्थकों के बीच झड़प

सिंधुदुर्ग (एजेंसी)। महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग में राजकोट किले में 2 दिन पहले गिरी छत्रपति शिवाजी की प्रतिमा को लेकर राजनीतिक घटनाक्रम तेज हो गए हैं। शिवसेना नेता आदित्य ठाकरे और भाजपा सांसद नारायण राणे अपने-अपने समर्थकों के साथ एक ही समय पर राजकोट के किले (जहां शिवाजी की प्रतिमा थी) पहुंचे। यहां दोनों के समर्थक आपस में भिड़ गए। बुधवार सुबह आदित्य ठाकरे किले में अपने समर्थकों के साथ चर्चा कर रहे थे। इसी दौरान नारायण राणे अपने बेटे निलेश राणे और भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ राजकोट किला पहुंचे। यहां तैनात पुलिस अधिकारियों से उनकी बहस होने लगी। इसके बाद ठाकरे समर्थकों से राणे के समर्थक भिड़ गए। दोनों के बीच धक्का-मुक्की होने लगी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, भाजपा कार्यकर्ताओं ने पहले ठाकरे कि खिलाफ नारेबाजी की थी, जिससे ठाकरे के समर्थक भड़क गए। घटना के बाद ठाकरे ने कहा- यहां जो हुआ, वह दुर्भाग्यपूर्ण था। शिवाजी महाराज के किले पर राजनीति नहीं करनी चाहिए थी।

राहुल ने गुजरात में बाढ़ की स्थिति पर जताई चिंता

नयी दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने गुजरात में बाढ़ की बिगड़ रही स्थिति पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए पीड़ित परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। लोकसभा में विपक्ष के नेता ने बुधवार को पार्टी कार्यकर्ताओं से पीड़ितों की मदद करने का आग्रह करते हुए सरकार से राहत तथा पुनर्निर्माण का कार्य तेज करने की अपील की, ताकि पीड़ितों के जख्मों को कुछ कम किया जा सके। श्री गांधी ने कहा, गुजरात में बाढ़ की स्थिति दिन प्रतिदिन और भयंकर होती जा रही है। इस आपदा में जिन परिवारों ने अपनों को खोया है, जिनकी संपत्ति का नुकसान हुआ है, उनके प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की आशा करता हूं। उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं तथा सरकार से पीड़ितों की मदद का आग्रह करते हुए कहा, सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं से अपील है कि वो प्रभावित लोगों की और राहत एवं बचाव कार्य में प्रशासन की हर संभव सहायता करें। सरकार से अपेक्षा है कि इस आपदा के प्रकोप को कम करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए, ताकि प्रभावित लोग जल्दी से जल्द पुनर्निर्माण और पुनर्वास की दिशा में बढ़ सकें।

दुष्यंत चौटाला ने चलाई बाइक, पुलिस ने काटा चालान

बल्लभगढ़ (एजेंसी)। बिना हेलमेट बाइक चलाते हुए दुष्यंत चौटाला। फरीदाबाद पुलिस का कहना है कि दुष्यंत वाली बाइक समेत 15 बाइकों के चालान काटे गए हैं। हरियाणा के फरीदाबाद में पुलिस ने जजपा नेता पूर्व डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला के बिना हेलमेट ड्राइविंग पर उनकी चलाई बाइक का चालान काट दिया। दुष्यंत ने एक बाइक रैली के दौरान यह बाइक चलाई थी। हालांकि ये बाइक दुष्यंत चौटाला नहीं बल्कि उनके समर्थक के नाम पर है। पुलिस ने जो चालान रसीद जारी की है, उसमें दुष्यंत चौटाला बाइक

चलाते हुए नजर आ रहे हैं। हालांकि उनके चेहरे को पुलिस ने धुंधला कर दिया है। पुलिस जांच के मुताबिक पूर्व डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला ने जो लाल रंग की बुलेट बाइक चलाई थी, वह रियासत अली के नाम पर रजिस्टर्ड है। चूंकि इस पर दुष्यंत चौटाला और उनके पीछे एक और व्यक्ति बिना हेलमेट के बैठे हुए थे तो उनका 2 हजार का चालान काटा गया है। खास बात यह है कि बाइक रैली का एक वीडियो सामने आया है। जिसमें जब दुष्यंत चौटाला को पीछे से हेलमेट के बारे में कहा गया तो उन्होंने सिर हिलाकर ना कर दिया। जानकारी के मुताबिक रविवार यानी 25 अगस्त को डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला फरीदाबाद के गोंछी में रैली करने पहुंचे थे। यहां जजपा नेता करामत अली ने जनसभा की थी। जनसभा से पहले जजपा ने बाइक रैली निकाली थी। यह बाइक रैली सोहना मोड़ टी-पॉइंट से गोंछी तक गई थी।

आईसीसी के सबसे युवा चेयरमैन जय शाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीसीसीआई के सचिव जय शाह को निर्विरोध अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद यानी आईसीसी का अध्यक्ष चुना गया है। जिसके बाद जय शाह सबसे कम उम्र के आईसीसी के चेयरमैन हैं। वहीं जय शाह की इस उपलब्धि को देखकर कोई भी हैरान नहीं है क्योंकि बीसीसीआई का सचिव रहते हुए उनकी कार्यशैली हर किसी ने देखी है। बता दें कि, जय शाह का क्रिकेट प्रशासन में औपचारिक प्रवेश 2009 में हुआ था। उस दौरान उन्होंने केंद्रीय क्रिकेट बोर्ड अहमदाबाद के साथ जिला स्तर पर काम करना शुरू किया। इसके बाद वह गुजरात क्रिकेट संघ (जीसीए) के कार्यकारी के रूप में राज्य स्तरीय प्रशासन में चले गए, और अंततः 2013 में इसके संयुक्त सचिव बने। हालांकि, कहा जा रहा है कि, जय शाह का आईसीसी चेयरमैन चुना जाना एक अच्छा फैसला है। इसका पहला कारण ये है कि जय शाह के खिलाड़ियों के साथ निजी स्तर पर अच्छे रिश्ते हैं। लेकिन इसका मतलब ये नहीं हैं कि भारत के आईसीसी के पूर्व प्रमुखों के खिलाड़ियों के साथ अच्छे समीकरण नहीं थे। जगमोहन डालमिया और एन श्रीनिवासन दो सफल व्यवसायी थे जो स्वाभाविक प्रशासक बने। वहीं अनुभवी राजनेता शरद पवार बीसीसीआई अध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान विश्वासपात्र सानियर खिलाड़ियों का नजरिया जानते थे।

बर्बादी की राह पर पाक क्रिकेटः इमरान खान

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री और विश्व विजेता पूर्व कप्तान इमरान खान ने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड पर जमकर निशाना साधा है। पाकिस्तान क्रिकेट इन दिनों कई संकटों से जूझ रहा है। बांग्लादेश के खिलाफ पाकिस्तान को मिली हार के बाद पूर्व खिलाड़ी इमरान खान ने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अधिकारियों को आड़े हाथों लेते हुए उनकी आलोचना की है। वर्तमान में भ्रष्टाचार के आरोप में जेल में सजा काट रहे इमरान खान ने पीसीबी पर जमकर आरोप लगाए है। पीसीबी प्रमुख मोहसिन नकवी को लेकर उन्होंने टिप्पणी की है। उन्होंने आरोप लगाया कि बोर्ड के मौजूदा नेता देश में क्रिकेट को बर्बाद कर रहे हैं। बता दें कि वर्तमान में पीसीबी प्रमुख मोहसिन नकवी हैं। पाक के पूर्व पीएम ने सोशल मीडिया पर कहा कि क्रिकेट एकमात्र ऐसा खेल है जिसे हर व्यक्ति टीवी पर देखना पसंद करता है। उन्होंने आरोप लगाया कि पीसीबी इस खेल को बर्बाद करने में जुटा हुआ है। अपने निजी हितों को पूरा करने के लिए पीसीबी क्रिकेट को नष्ट करने पर तुला है। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान ने कहा कि नकवी पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड में हर स्तर पर अपने पसंद के लोगों को जगह दे रहे है। बोर्ड में काबिलियत के अनुसार किसी को शामिल नहीं किया जा रहा है। पार्टी की दुर्दशा हो गई है। उन्होंने कहा कि ये पहला मौका है जब हम टी20 विश्व कप के नॉकआउट चरण में भी नहीं पहुंच सकते है।

मेरा अंत दूर नहीं... केएल राहुल ने संन्यास को लेकर दिया बड़ा बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के विकेटकीपर बल्लेबाज केएल राहुल ने अपने संन्यास को लेकर खुलकर बात की। राहुल ने माना है कि वो हमेशा से क्रिकेटर बनना चाहते थे। लेकिन जब वो 30 साल के हुए हैं, उन्हें चिंता होने लगी कि उनके पास पेशेवर खिलाड़ी के रूप में खेलने के लिए अब ज्यादा समय नहीं बचा है। राहुल पिछले कुछ सालों से भारत की वनडे और टेस्ट टीम का अहम हिस्सा रहे हैं और उन्होंने अपनी बल्लेबाजी से टीम को कई मैच जिताने में मदद की है। उन्होंने लाल और सफेद गेंद दोनों में सलामी और मध्यक्रम के बल्लेबाज के रूप में अच्छा प्रदर्शन कर अपनी बहुमुखी प्रतिभा दिखाई है। हालांकि, अब उन्हें अपना रिटायरमेंट करीब दिख रहा है। हाल ही में, केएल राहुल ने पॉडकास्ट में रिटायरमेंट के बारे में अपने विचार शेयर किए और कहा कि वह इसे लेकर असुरक्षित नहीं हैं, लेकिन उन्हें लगता है कि उनका करियर बहुत जल्दी खत्म होने वाला है। स्टार बल्लेबाज ने जोर देकर कहा कि एक फिट खिलाड़ी अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में 40 साल तक खेल सकता है और इसे आईपीएल में कुछ साल तक और बढ़ा सकता है। राहुल ने आगे कहा कि, कोई असुरक्षा नहीं है लेकिन एक भावना है कि ये सब खत्म हो जाता है। मेरे लिए ये बहुत जल्दी खत्म हो सकता है।

मैं संजय सिंह को नहीं जानती... डब्ल्यूएफआई अध्यक्ष पर सवाल हुआ तो भड़क गईं विनेश फोगाट

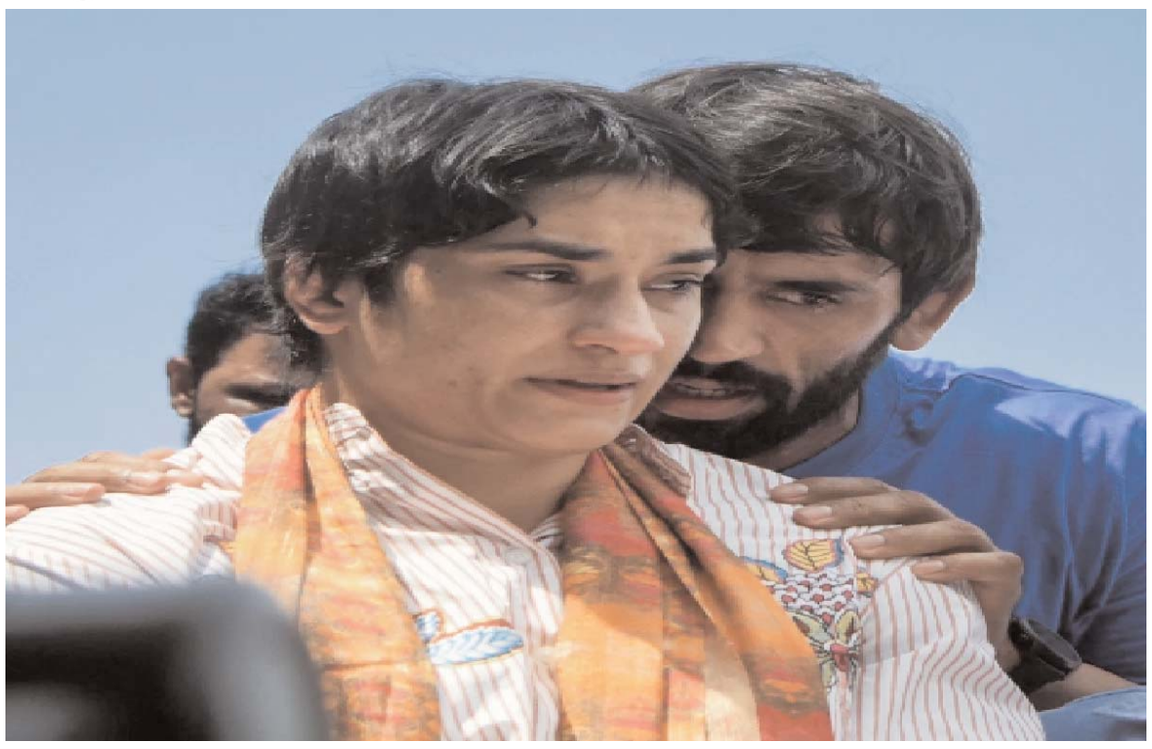

नई दिल्ली (एजेंसी)। विनेश फोगाट जब से पेरिस से लौटी हैं तभी से उनके लिए देश में अलग-अलग जगह सम्मान समारोह आयोजित किए जा रहे हैं। विनेश लोगों का प्यार देखकर मेडल गंवाने का दुख भूलने की कोशिश कर रही है। इस बीच उनसे जब रेसलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष संजय सिंह को लेकर सवाल किया गया तो वह नाराज हो गईं।

समारोह में हिस्सा लेने विनेश झज्जर पहुंची थीं। इस दौरान उनसे रेसलिंग के भविष्य को लेकर सवाल किया गया। इसी दौरान उनसे संजय सिंह के पहलवानों को लेकर दिए गए बयान पर भी सवाल किया गया। संजय सिंह का नाम सुनते ही विनेश के चेहरे के हाव-भाव बदल गए।

इस दौरान गुस्से में पत्रकार से विनेश ने कहा कि, माफ कीजिए सर आप मुझसे विवादित सवाल मत पूछिए। कौन है संजय सिंह? मैं नहीं जानती कौन है। आपको यहां किसने भेजा है, यहां इतना अच्छी प्रोग्राम चल रहा है आप क्यों विवाद करने वाले सवाल पूछ रहे हैं। बता दें कि, संजय सिंह ने हाल ही में विनेश को लेकर बड़ा बयान दिया था। उन्होंने इस पहलवान के संन्यास पर कहा कि, अगर विनेश शुद्ध रूप से कुश्ती खेलनी है, तो उन्हें संन्यास के अपने निर्णय पर एक बार पुनर्विचार करना चाहिए। उनसे प्रेरणा लेकर महिला पहलवानों की हमारी नई पीढ़ी आगे बढ़ेगी। इसके आगे उन्होंने कहा था कि, जिस हिसाब से विनेश आजकल राजनीतिक मंच शेयर कर रही हैं ऐसे में अगर उन्हें भविष्य में राजनीति ही करनी है तो फिर उनहें कुश्ती में राजनीति नहीं करनी चाहिए।

इंग्लैंड के धाकड़ बल्लेबाज डेविड मलान ने लिया संन्यास

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड टीम के ओपनिंग बल्लेबाज डेविड मलान ने 37 साल की उम्र में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह दिया है। इसका ऐलान उन्होंने बुधवार को किया, उन्होंने 2023 नवंबर में आखिरी मैच इंग्लैंड के लिए खेला था। उन्होंने अपने संन्यास का ऐलान करते हुए कहा कि उन्हें हमेशा एक चीज का मलाल रहेगा कि वह टेस्ट क्रिकेट में लगातार बहुत अच्छा नहीं कर पाए, जबकि टेस्ट क्रिकेट ही उनकी पहली प्राथमिकता रहा था। 36 वर्ष के मलान ने ब्रिटिश अखबार 'द टाइम्स आफ लंदन' से कहा कि सफेद गेंद के प्रारूप में अपनी सफलता से वह खुश है लेकिन टेस्ट क्रिकेट में वह अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर सके। मलान ने 22 टेस्ट, 30 वनडे और 62 टी20 मैच खेले हैं। वह टी20 प्रारूप में 2020 में दुनिया के नंबर एक बल्लेबाज बने। उन्होंने पिछले साल वनडे विश्व कप के बाद से इस प्रारूप में नहीं खेला है। इस दौरान मलान ने कहा कि, मैने तीनों प्रारूपों को काफी संजीदगी से लिया लेकिन टेस्ट क्रिकेट में काफी मेहनत चाहिए।

इंडियन प्रीमियर लीग में जहीर खान की वापसी

नई दिल्ली (एजेंसी)। लखनऊ सुपर जाइंट्स ने भारत के पूर्व तेज गेंदबाज जहीर खान को आईपीएल 2025 मेगा नीलामी से पहले टीम का मेंटर बनाया है। 45 वर्षीय जहीर दो साल बाद आईपीएल में लौटेंगे। इससे पहले वह 2018 से 2022 के बीच पांच बार की चैम्पियन मुंबई इंडियंस से जुड़े थे। बता दें कि, गौतम गंभीर के जाने के बाद से लखनऊ टीम में यह पद रिक्त है। गंभीर कोलकाता नाइट राइडर्स से जुड़ गए थे जिसने 2024 आईपीएल जीता। अब गंभीर भारतीय टीम के मुख्य कोच हैं। वहीं लखनऊ सुपर जायंट्स ने जहीर खान को मेंटर बनाए जाने की जानकारी सोशल मीडिया पर वीडियो शेयर कर दी। जहीन ने 2008 में आईपीएल डेब्यू किया था। इसके बाद 2017 में आखिरी बार खेले। जहीर खान इसके बाद अलग-अलग भूमिका रहे। वे 2018 से 2022 तक मुंबई इंडियंस के साथ रहे। अब वे लखनऊ के लिए मेंटर की भूमिका निभाएंगे। उनसे पहले गौतम गंभीर इस पद पर थे, गंभीर ने आईपीएल 2024 में कोलकाता नाइट राइडर्स का दामन थाम लिया। उनके जाने के बाद लखनऊ में मेंटर की जगह खाली थी। जिसके बाद जहीर को ये पद दिया गया। अगर लखनऊ के कोचिंग स्टाफ की बात करें तो जस्टिन लैंकर हेड कोच की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। वे एंडी फ्लावर की जगह आए थे, लांस क्लूजनर और एडम वोग्स टीम असिस्टिंट कोच हैं। जहीर के आने के बाद कोचिंग स्टाफ में किसी तरह का बदलाव नहीं होगा। लेकिन जहीर मेंटर के साथ-साथ और भी जिम्मेदारी निभाएंगे। वे प्लेयर डेवलमेंट प्रोग्राम का आयोजन भी करवा सकते हैं।

पाकिस्तान के बाबर आजम को नुकसान

कराची (एजेंसी)। पाकिस्तान के स्टार बल्लेबाज बाबर आजम बुधवार को जारी ताजा आईसीसी रैंकिंग में नीचे खिसक गए हैं। पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच खेले गए पहले टेस्ट मैच के बाद आईसीसी ने टेस्ट रैंकिंग जारी की। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान बाबर आजम 6 स्थान के नुकसान के साथ 9वें नंबर पर पहुंच गए हैं। जबकि भारत के सलामी बल्लेबाज विराट कोहली और यशस्वी जायसवाल को फायदा हुआ है। जहां इंग्लैंड के बल्लेबाज जो रूट टॉप पर कायम हैं, जबकि हैरी ब्रूक ने श्रीलंका के खिलाफ जारी टेस्ट सीरीज में दमदार प्रदर्शन करके लंबी छलांग लगाई है। वहीं यशस्वी और विराट को फायदा पहुंचा है। यशस्वी जायसवाल को एक स्थान का फायदा हुआ और वह सातवें पायदान पर हैं जबकि विराट कोहली दो स्थान के फायदे के साथ 8वें स्थान पर पहुंच गए हैं। इसके अलावा पाकिस्तान के बाबर आजम बांग्लादेश के खिलाफ मैच से पहले रैंकिंग में तीसरे नंबर थे। लेकिन खराब प्रदर्शन की वजह से उन्हें 6 स्थान का नुकसान हुआ है और अब वह 9वें स्थान पर हैं। इंग्लैंड के बल्लेबाज हैरी ब्रूक तीन स्थान के फायदे के साथ चौथे पायदान पर हैं। उनसे आगे जो रूट और केन विलियमसन और डेरिल मिचेल हैं। आईसीसी द्वारा जारी बल्लेबाजों की टेस्ट रैंकिंग में टॉप 10 में भारत के तीन बल्लेबाज रोहित शर्मा, यशस्वी जायसवाल और विराट कोहली हैं। बांग्लादेश के अनुभवी बल्लेबाज मुशफिकुर रहमान को भी रैंकिंग में फायदा हुआ है।

मौजूदा डब्ल्यूबीबीएल चैंपियन एडिलेड स्ट्राइकर्स के लिए खेलेंगी स्टार बल्लेबाज

एडिलेड (एजेंसी)। भारत की स्टार बल्लेबाज स्मृति मंधाना महिला बिग बैश लीग (डब्ल्यूबीबीएल) के आगामी सत्र में मौजूदा चैंपियन एडिलेड स्ट्राइकर्स की तरफ से खेलेगी। यह भारतीय सलामी बल्लेबाज इससे पहले डब्ल्यूबीबीएल की तीन टीमों ब्रिस्बेन हीट, सिडनी थंडर और होबार्ट हरिकेंस के लिए खेल चुकी हैं। वह लीग के सत्र से पहले विदेशी खिलाड़ियों से अनुबंध करने के नियम के तहत रविवार को होने वाले ड्राफ्ट से पहले स्ट्राइकर्स में शामिल हो गईं।

मंधाना हालांकि लीग के शुरुआती मैचों में नहीं खेल पाएगी क्योंकि भारत को अक्टूबर के अंत में तीन वनडे मैचों के लिए न्यूजीलैंड की मेजबानी करनी है। डब्ल्यूबीबीएल 27 अक्टूबर से शुरू हो रहा है। भारत को एक दिसंबर को होने वाले डब्ल्यूबीबीएल फाइनल के ठीक बाद ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन वनडे मैच भी खेलने हैं। स्ट्राइकर्स की कप्तान ताहलिया मैकग्रा ने क्रिकेट.कॉम.एयू से कहा,''हम पिछले कुछ वर्षों से उसे टीम से जोड़ने का प्रयास कर रहे थे। उसकी बल्लेबाजी अविश्वसनीय है। वह शानदार बल्लेबाज है और थोड़े समय में ही मैच का पासा पलटने की क्षमता रखती है।

रोहन जेटली संभालेंगे जय शाह की गद्दी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के सेक्रेट्री जय शाह अब बीसीसीआई के सदस्य नहीं रहे है। क्रिकेट कम्यूनिटी में उनका रुतबा और अधिक बढ़ गया है। जय साह निर्विरोध रूप से इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसि?ल यानी आईसीसी के चेयरमैन बने है। महज 35 वर्ष की उम्र में आईसीसी चेयरमैन बनकर जय शाह ने नया रिकॉर्ड भी कायम कर दिया है। वो आईसीसी के सबसे कम उम्र के चेयरमैन बनने वाले शख्स बन गए है। वहीं जय शाह आईसीसी में अब अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए पूरी तरह से तैयार है। ऐसे में बीसीसीआई में उनकी जगह खाली हो गई है। बीसीसीआई में जय शाह की जिम्मेदारी संभालने के लिए भी नाम तय हो गया है। इस पद की जिम्मेदारी दिवंगत और पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण जेटली के बेटे रोहन जेटली संभालेंगे। जय शाह इस वर्ष एक दिसंबर को आईसीसी चेयरमैन ग्रेग बार्कले के पद छोड़ने के बाद इस गद्दी को संभालेंगे। वहीं जय शाह बीसीसीआई सचिव पद पर 2019 से काबिज थे, जो अब उन्हें छोड़ना होगा। इस पद की जिम्मेदारी रोहन जेटली संभालेंगे। रोहन जेटली दि?ल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष है। अब वो अगले बीसीसीआई सचिव बनने की तैयारी में है। क्रिकेट प्रशासन में रोहन जेटली काफी एक्टिवली हिस्सा लेते है। वर्ष 2023 में ही रोहत जेटली दूसरी बार दिल्ली और जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष बने है। इससे पहले वो वर्ष 2020 में भी डीडीसीए के अध्यक्ष थे। रोहन जेटली की शिक्षा की बात करें तो उन्होंने भारत से ही कानून की डिग्री हासिल की है। उन्होंने कॉर्नेल यूनिवर्सिटी से मास्टर ऑफ लॉ की डिग्री ली है। रोहन जेटली वर्तमान में सुप्रीम कोर्ट और दिल्ली हाईकोर्ट में प्रैक्टिस करते है। वो कई केस की पैरवी भी करते है। मार्च 2024 में रोहन को दिल्ली हाईकोर्ट में केंद्र सरकार के स्थायी वकील के तौर पर नियुक्ति मिली है। वहीं बीसीसीआई सचिव बनने के लिए उनका पक्ष काफी मजबूत है। दिल्ली एंड डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन की जिम्मेदारी संभालने के बाद उन्हें एडमिनिस्ट्रेशन का भी काफी अनुभव मिला है। ऐसे में रोहन जेटली का नाम अनुभवी खेल प्रशासकों में चुना जा रहा है।

उनकी लीडरशीप में ही दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में 2023 वनडे वर्ल्डकप के मैचों का आयोजन हुआ था। रोहत जेटली के नेतृत्व में ही दिल्ली प्रीमियर लीग भी आयोजित की गई थी। इसमें कई स्टार खिलाड़ियों ने भी हिस्सा लिया था, जिसमें ऋषभ पंत, ईशांत शर्मा, यश धुल, आयुष बडोनी, ललित यादव शामिल है।

सभी विभाग प्रमुख सीएम हेल्पलाइन के निराकरण पर फोकस करें

चालू माह की कोई भी शिकायत नहीं होगी फोर्स क्लोज : कलेक्टर

समय-सीमा प्रकरणों की बैठक

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मैहर कलेक्टर रानी बाटड ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन की ग्रेडिंग में मैहर जिले की रैंकिंग संतोषजनक नहीं है। सभी विभाग प्रमुख अधिकारी सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों को स्वयं देखें और संतुष्टिपूर्ण जबाव अंकित करें। कलेक्टर ने कहा कि चालू माह की कोई भी शिकायत फोर्स क्लोज नहीं की जायेगी। सभी विभाग प्रमुख सीएम हेल्पलाइन के निराकरण पर फोकस करें। बुधवार को मैहर कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में समय-सीमा प्रकरणों की बैठक में यह निर्देश दिये गये। इस अवसर पर एसडीएम विकास सिंह, डॉ. आरती सिंह, आरती यादव, उप संचालक सामाजिक न्याय सौरभ सिंह, सहायक संचालक शिक्षा गिरीश अग्निहोत्री, जिला संयोजक आदिम जाति अविनाश पाण्डेय, सीईओ प्रतिपाल बागरी, ओपी अस्थाना सहित जिला और विकासखण्ड स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर रानी बाटड ने कहा कि मैहर जिला सीएम हेल्पलाइन में 27 जिलों की ग्रेडिंग में डी-श्रेणी के साथ 20वें स्थान पर है। सभी विभाग मिलकर प्रयास करें और जिले को डी-श्रेणी से बाहर लायें। कलेक्टर ने विभागवार सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों और उनके निराकरण की समीक्षा की। इनमें सर्वाधिक राजस्व के 1304, ऊर्जा 837, पुलिस 439, खाद्य 394, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी 402, स्वास्थ्य 107, श्रम 21, सामाजिक न्याय 47, सामान्य प्रशासन 44, लोक शिक्षण 63, नगरीय निकाय 490, राज्य शिक्षा केन्द्र 54 शिकायतें लंबित पाई गई।

कलेक्टर ने लोक निर्माण विभाग की लंबित 6 शिकायतों में की गई कार्यवाही और अंकित किये गये जबाब का अवलोकन किया। उन्होंने अंकित जबाब को त्रुटिपूर्ण और उचित नहीं पाये जाने पर एसडीओ लोक निर्माण के प्रति अप्रसन्नता व्यक्त की। इसी प्रकार 3 शिकायतों में कोई कार्यवाही या जबाब अंकित नहीं पाये जाने पर इसे नाट अटेण्ड मानते हुए नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। स्वास्थ्य विभाग की 107 लंबित शिकायतों में की गई कार्यवाही का अवलोकन करते हुए कलेक्टर रानी बाटड ने कहा कि आधी से ज्यादा शिकायतें हमारे द्वारा गलत जबाब अंकित करने से पेंडिंग पडी हुई है। उन्होंने कहा कि शिकायतों का निराकरण संबंधित अधिकारी स्वयं करें और स्वयं देखे भी मात्र आपरेटर के भरोसे नहीं रहे। जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. विजय आरख को आज ही शाम 5 बजे तक सभी शिकायतों में सही निराकरण अंकित कराने के निर्देश भी दिये। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी की 402 शिकायतें हैण्डपम्प की खराबी से संबंधित होने पर उन्होंने टीम बनाकर गांव-गांव के हैण्डपम्प सुधारने के निर्देश दिये। इसी प्रकार नगर पालिका मैहर, नगर परिषद रामनगर, अमरपाटन की 490 शिकायतों को अभियान चलाकर अगले सप्ताह तक 50 प्रतिशत शिकायतों का निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये।

2016-17 की 3 शिकायतें लंबित रखने पर डीपीसी को नोटिस: कलेक्टर मैहर रानी बाटड ने राज्य शिक्षा केन्द्र की लंबित 54 शिकायतों के निराकरण की शिकायतवार समीक्षा की। समीक्षा के दौरान वर्ष 2016-17 की तीन शिकायतें अभी तक पेंडिंग रखने पर उन्होंने जिला परियोजना समन्वयक जिला शिक्षा केन्द्र को नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। समीक्षा में पाया गया कि वर्ष 2017 की तीन शिकायतों में अपात्र होने पर भी न तो उचित जबाब अंकित किया गया और ना ही फोर्स क्लोज किया गया। इन तीनों शिकायतों को दिसंबर 2023 से विभाग द्वारा कोई अपडेटशन भी नहीं किया गया। इसी प्रकार वर्ष 2021 में गोकरण द्वारा की गई सीएम हेल्पलाइन की शिकायत में कोई जबाब अंकित नहीं पाये जाने और अपडेट नहीं करने पर कलेक्टर ने एडीपीसी पर नाराजगी व्यक्त करते हुए डीपीसी को नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने कहा कि चार विभागों की शिकायतवार समीक्षा आज की गई है। अगली बैठक से 4-5 विभागों की शिकायतवार समीक्षा कर की गई कार्यवाही और अंकित जबाब का परीक्षण किया जायेगा।

ट्रांसफार्मर चढ़ाने के दौरान संविदा कर्मी की मौत

बिजली के पोल पर चढ़ते समय नीचे गिरा, परिवार के लोगों ने किया हंगामा

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट निप्र। चित्रकूट में विद्युत पोल में ट्रांसफार्मर चढ़ाने के दौरान एक संविदा कर्मी लाइनमैन की गिरकर मौत हो गई। जिससे परिजनों में कोहराम मच गया। इस हादसे के बाद गुस्साए परिजनों ने मृतक के शव को पीएम हाउस के बाहर रखकर विद्युत विभाग के अधिकारियों के खिलाफ जमकर प्रदर्शन किया। परिजनों की मांग है कि उन्हें दुर्घटना बीमा योजना का लाभ मिले।

मृतक की पहचान मईयादीन यादव के रूप में हुई है। जो विद्युत विभाग में आउटसोर्सिंग के जरिए लोढ़वारा विद्युत फीडर में लाइनमैन के पद पर तैनात था। यह हादसा तब हुआ जब वह रेहुटा गांव में ट्रांसफार्मर चढ़ाने के लिए विद्युत पोल पर चढ़ा था। हादसे की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

विद्युत विभाग के खिलाफ गुस्सा: घटना के बाद से ही विद्युत विभाग के अधिकारी मौके पर नहीं पहुंचे। जिससे परिजनों का गुस्सा भड़क उठा। उन्होंने दुर्घटना बीमा की मांग को लेकर विद्युत विभाग के खिलाफ प्रदर्शन शुरू कर दिया। प्रदर्शनकारियों का कहना था कि जब तक उन्हें बीमा योजना का लाभ नहीं मिलता, तब तक वे धरने से हटेंगे नहीं।

प्रशासन ने दिया आश्वासन: स्थिति की गंभीरता को देखते हुए एसडीएम और सीओ मौके पर पहुंचे। परिजनों को समझाने का प्रयास किया। हालांकि, कई घंटों के प्रयास के बाद भी विद्युत विभाग के अधिकारी मौके पर नहीं पहुंचे। अंत में, एसडीएम ने परिजनों को लिखित में मदद का आश्वासन दिया। जिसके बाद परिजनों ने धरना समाप्त कर दिया।

इस दुखद घटना ने एक बार फिर से संविदा कर्मियों की सुरक्षा और उनके हकों के प्रति विभागीय उदासीनता को उजागर किया है। उम्मीद है कि प्रशासन इस मामले में त्वरित कार्रवाई करेगा और पीड़ित परिजनों को न्याय दिलाएगा।

नगर पालिका परिशद मैहर के वार्ड क्रमांक-2 में पार्शद पद के निर्वाचन हेतु 4 अभ्यर्थी ने भरा नामांकन

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मैहर जिले में नगरपालिका परिषद मैहर के रिक्त वार्ड क्रमांक-2 से पार्षद पद के निर्वाचन के लिए अंतिम दिन 28 अगस्त 2024 को दोपहर 3 बजे तक कुल 4 अभ्यर्थियों ने अपना नाम निर्देशन पत्र दाखिल किया है। इन अभ्यर्थियों में दमडी पिता बैजनाथ ने इंडियन नेशनल कांग्रेस, दीप कुमार पिता ईश्वरदीन तथा नागेन्द्र पिता दीप कुमार ने भारतीय जनता पार्टी और रवि कुमार रवि पिता बसंतलाल रवि ने बहुजन समाज पार्टी से नामांकन पत्र दाखिल किया है। नाम निर्देशन पत्र जमा करने के उपरांत 29 अगस्त को नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा/स्क्रूटनी की जायेगी। नाम निर्देशन पत्र वापस लेने की अंतिम तिथि 31 अगस्त को दोपहर 3 बजे तक रहेगी। मतदान 11 सितंबर 2024 को संबंधित मतदान केन्द्रों पर होगा।

जिले में अब तक 610.5 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। जिले में इस वर्ष 1 जून से 28 अगस्त 2024 तक 610.5 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख सतना से प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक जिले की सतना (रघुराजनगर) तहसील में 940.2 मि.मी., सोहावल (रघुराजनगर) में 351.9 मि.मी., बरौंधा (मझगवां) में 647.8 मि.मी, बिरसिंहपुर में 671 मि.मी., रामपुर बाघेलान में 450 मि.मी., नागौद में 804.9 मि.मी., जसो (नागौद) में 289.4 मि.मी. एवं उचेहरा में 728 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई है। जिले की औसत सामान्य वर्षा 891.7 मि.मी. है। गत वर्ष इस अवधि में 435.3 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई थी।

उफनाई नदी में गायों के धकेलने वाले पकड़ाए

पुलिस ने नाबालिग समेत 4 को किया गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। सतना में गायों को उफनाई नदी में जबरन बहाने की क्रूर घटना को अंजाम देने वाले पुलिस के शिकंजे में आ गए हैं। मामले में सतना पुलिस ने नाबालिग समेत 4 आरोपियों को इस मामले में गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस के मुताबिक नागौद और सिविल लाइन थाना क्षेत्र के सीमाई इलाके के ग्राम बमहौर में मंगलवार को गायों को पीट-पीटकर उफनाई नदी में धकेलने और तड़पने-मरने के लिए मजबूर करने वाले 4 आरोपी गिरफ्तार कर लिए गए हैं। इनमें से एक नाबालिग है जबकि तीन अन्य आरोपियों में बेटा बागरी, रवि बागरी और रामपाल चौधरी निवासी हरदुआ मझोल थाना नागौद शामिल हैं।

नागौद टीआई अशोक पांडेय ने बताया कि चारों आरोपियों के खिलाफ 4/9 गोवंश प्रतिषेध अधिनियम तथा बीएनस की धारा 325 (3/5) के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है। आरोपियों को बुधवार की सुबह गिरफ्तार कर अदालत में पेश कर दिया गया है।

इनके खिलाफ विक्की उर्फ विनोद पाराशर निवासी नागौद ने शिकायत दर्ज कराते हुए पुलिस को बताया था कि सतना से वापसी के वक्त उन्होंने ये क्रूर और अमानवीय घटना देखी थी। पुलिस ने बताया कि उफनाई नदी में आरोपियों ने लगभग 15 गायें खदेडी थीं, उनमें से कुछ की मौत भी हुई है जबकि कुछ बच गई हैं। कितनी गायों की मौत हुई, अभी यह स्पष्ट नहीं हो सका है क्योंकि पानी का बहाव तेज था और गायें बह कर दूर तक भी चली गई हो सकती हैं। आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि वे ऐरा से परेशान थे इसलिए उन्होंने यह घटना अंजाम दी।

बता दें कि मंगलवार की दोपहर बमहौर में रेलवे पुल के नीचे उफनाई नदी में गायों को जबरदस्ती धकेला गया था। गायें पानी के तेज बहाव में बहते हुए स्टॉप डैम के नीचे जा गिरी थीं। कुछ के तो पैर भी ऊपर उठ गए थे और वे जान बचाने के लिए संघर्ष करती रही थी। इस अमानवीय घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था जिसके बाद एसपी आशुतोष गुप्ता ने नागौद और सिविल लाइन थाना पुलिस को त्वरित कार्रवाई के लिए कहा था।

कुएं में गिरकर 14 साल के बच्चे की मौत

स्कूल से लौटकर पास में खेल रहा था, पैर फिसलने से अंदर गिरा

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट निप्र। चित्रकूट के बरगढ़ थाना क्षेत्र के मुर्का गांव में मंगलवार को एक 14 वर्षीय छात्र आसिफ अली पुत्र शाहिद अली स्कूल से घर लौटने के बाद अपने घर के पास बने कुएं के सामने कुछ बच्चों के साथ खेल रहा था। दोपहर लगभग 2 बजे अचानक बारिश शुरू हो गई। जिससे बचने के लिए आसिफ ने घर की ओर दौड़ लगाई। दौड़ते समय उसका पैर फिसल गया और वह कुएं में गिरकर डूब गया।

घटना के लगभग 15 मिनट बाद परिजनों को जानकारी हुई लेकिन तब तक आसिफ की हालत गंभीर हो चुकी थी। परिजनों ने तुरंत उसे कुएं से बाहर निकाला। लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी।

पुलिस मामले की जांच कर रही: सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा भरते हुए बुधवार को जिला मुख्यालय में पोस्टमार्टम के लिए भेजा। आसिफ के परिजन इस घटना से गहरे सदमे में हैं। उन्होंने बताया कि यह घटना बेहद अचानक हुई। जिससे वे संभल नहीं पाए। पुलिस मामले की जांच कर रही है। परिजनों से पूछताछ कर रही है। ताकि इस घटना के सही कारणों का पता चल सके।

राष्ट्रीय खेल सप्ताह के अंतर्गत बालीबाल खेल का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। लोक शिक्षण संचालनालय खेल एवं कल्याण विभाग के निर्देशानुसार बुधवार को शासकीय व्यंकट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक-2 में बालक और बालिका वर्ग में बालीबाल खेल का आयोजन किया गया। बालक वर्ग में 4 टीमों नीरज चोपडा, संजय फोगाट, विवेक सागर तथा सचिन तेंदुलकर राष्ट्रीय खिलाडियों के नाम पर टीमों ने भाग लिया। जिसमें व्यंकट क्रमांक-2 की नीरज चोपडा टीम विजेता रही। इसी प्रकार बालिका वर्ग में पीटी ऊषा, मनु भाकर, स्मृति मंधाना तथा पूजा वस्त्रकार के नाम पर टीमों ने भाग लिया। जिसमें क्राइस्ट ज्योति की मनु भाकर की टीम विजेता बनी।

इस दौरान बालक तथा बालिका वर्ग की विजेता टीम को मेजर ध्यानचन्द्र ट्राफी प्रदान की गई। तत्पश्चात फिट इंडिया फिट रहने के लिए सभी खिलाड़ियों को खेल अधिकारी एसपी तिवारी ने शपथ भी दिलाई। इस अवसर पर विद्यालय की प्राचार्य रश्मि शुक्ला, जिला क्रीडा निरीक्षक मीना त्रिपाठी, सचिव जिला फुटबाल संतोष सिंह, बालीवाल संघ नरेंद्र मिश्रा, फुटबॉल संघ मिथिलेश चतुर्वेदी, खेल अधिकारी एसपी तिवारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के व्यायाम निर्देशक धीरेन्द्र सिंह द्वारा किया गया।

श्री परमहंस आश्रम धारकुंडी में श्री कृष्ण जन्माष्टमी मनाई गई

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। श्री परमहंस आश्रम धारकुंडी में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर नियंता विकास समिति द्वारा संचालित स्वामी विवेकानंद आवासीय योग शोध संस्थान नागौद के बच्चों के द्वारा मनमोहक भजनों की प्रस्तुति दी गई । सभी बच्चों के द्वारा श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक श्री कृष्ण की लीलाओं पर आधारित कई भजनों की प्रस्तुति ने श्रोताओं एवं भक्तों का मन मोह लिया।

सभी ने गुरु महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया, प्रसाद ग्रहण कर जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई गई।

जमीन विवाद में महिला की पिटाई

पीड़िता बोली- परिजन उसको घर-जमीन में हिस्सा नहीं दे रहे, मांगने पर मारपीट करते हैं

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट निप्र। चित्रकूट के कर्वी कोतवाली क्षेत्र के कसहाई रोड परज्ञान भारती के पास आज जमीन के विवाद में परिवार में मारपीट हो गई। परिवार के कुछ सदस्यों ने महिला की पिटाई कर दी। पीड़िता मनीषा सिंह ने आरोप लगाया है कि उनके पारिवारिक जन उनके घर और जमीन में हिस्सा नहीं बांट रहे हैं। जब उन्होंने हिस्सा बांटने की बात कही तो गुस्से में आकर मारपीट पर उतारू हो गए।

मनीषा सिंह के मुताबिक, आज दोपहर करीब 1:30 बजे संतोष और मनीष पाल शराब के नशे में उनके घर पहुंचे। गाली-गलौज करते हुए उन्होंने मनीषा सिंह के साथ मारपीट शुरू कर दी। शोर सुनकर मनीषा के पति और पुत्र जब उसे बचाने आए तो संतोष और मनीष के साथ चार अन्य लोग भी उनके साथ मारपीट में शामिल हो गए।

पीड़ित परिवार ने इस घटना की शिकायत कर्वी कोतवाली पुलिस से की है। पुलिस ने सभी घायलों को तुरंत इलाज के लिए सोनपुर जिला अस्पताल भेज दिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

सतना के सराफा बाजार में यूपी पुलिस की धमक

दो लोगों को उठाया, कारोबारियों में हड़कंप

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। सतना के सराफा बाजार में यूपी पुलिस की धमक से हड़कंप मचा हुआ है। मंगलवार को यूपी पुलिस ने दबे पांव दबिश देकर सतना से दो लोगों को पकड़ा और अपने साथ ले गई। पिछले चार दिनों में यूपी पुलिस 4 लोगों को सतना से दबोच चुकी है।

जानकारी के मुताबिक, मंगलवार को यूपी पुलिस की एक टीम ने सतना के सराफा बाजार में दबिश देकर एक सराफा कारोबारी और गलाई का काम करने वाले एक युवक को धर दबोचा। पकड़े गए लोगों में सराफा कारोबारी सुनील सोनी तथा गलाई का काम करने वाले विजय नामक युवक का नाम सामने आया है।

सराफा बाजार से जुड़े सूत्रों ने बताया कि यूपी 78 नंबर की गाड़ी से आई यूपी पुलिस की टीम दोनों को अपने साथ ले गई है। इन्ही सूत्रों ने बताया कि तीन दिन पहले भी यूपी पुलिस टिकुरिया टोला से अश्वनी दाहिया तथा बस स्टैंड में संचालित एक होटल से सोनू कुशवाहा को भी पकड़ा था।

यूपी पुलिस की सतना में आमद और जारी धर पकड़ के बारे में स्थानीय थानों की पुलिस को तो कोई जानकारी नही दी गई लेकिन बताया जाता है कि यूपी के अतर्रा, सीतापुर और कर्वी क्षेत्र में लगातार हो रही चोरियों के तार सतना से जुड़े हैं।

अश्वनी दाहिया और सोनू कुशवाहा के यूपी पुलिस की गिरफ्त में आने के बाद मंगलवार को सराफा कारोबारी सुनील सोनी और विजय की धरपकड़ के बाद यह माना जा रहा है कि सतना से जा कर चोरी की वारदात को अंजाम देने के बाद चोर सोना-चांदी इनके माफ़र्त गलाते थे। उधर, यूपी पुलिस की सतना के सराफा बाजार में दबिश से सराफा कारोबारियों में हड़कंप मचा हुआ है।

फुटबाल खेल का आयोजन आज प्रियम्बदा विद्यालय के खेल मैदान में

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। खेल और युवा कल्याण मंत्रालय एवं संचालनालय खेल और युवा कल्याण भोपाल के निर्देशानुसार तथा कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय खेल दिवस 26 से 31 अगस्त 2024 तक खेल पखवाडा दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। जिला खेल एवं युवा कल्याण अधिकारी ने बताया कि इस दौरान जिला मुख्यालय में विभिन्न खेल गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है।

जिसमें 29 अगस्त को दोपहर 12 बजे से 1 बजे तक प्रियम्बदा बिडला उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के खेल मैदान में फुटबाल तथा प्रातः 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक सिंधु उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में रस्साकशी, 30 अगस्त को प्रातः 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक प्रियम्बदा बिडला उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के खेल मैदान में बास्केटबाल तथा 31 अगस्त को प्रातः 7 बजे से प्रातः 10 बजे तक प्रियम्बदा बिडला उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के खेल मैदान में वॉक रेस का आयोजन किया जायेगा।

अमरपाटन एसडीएम ने किया कस्तरा ग्राम का भ्रमण

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। कलेक्टर मैहर रानी बाटड के निर्देशानुसार अमरपाटन एसडीएम आरती यादव ने ग्राम पंचायत जमुना के ग्राम कस्तरा का भ्रमण किया। मुकुंदपुर ताला क्षेत्र के कस्तरा इलाके में जल भराव से हो रही लोगों की परेशानी से संबंधित स्थानीय सोशल मीडिया में चल रही भ्रामक जानकारी के बारे में एसडीएम अमरपाटन मौके पर पहुंची और उन्होंने स्थानीय जनों से वस्तु स्थिति के संबंध में जानकारी ली।

मौके पर गांव के हालात सामान्य पाये गये। उन्होंने किसी भी प्रकार की परेशानी होने पर ग्रामीण जनों को स्थानीय प्रशासन के अधिकारियों के फोन नम्बर उपलब्ध कराते हुए आपदा या विषम परिस्थितियों में तत्काल अवगत कराने की अपील भी की।

उन्होंने कहा कि ग्राम कस्तरा या क्षेत्र के अन्य ग्रामीणजनों को समस्या होने पर वे सचिव कृष्ण प्रताप सिंह 8319930045, सरपंच प्रकाश सिंह बघेल 7440313824, पटवारी दीपक सिंह बघेल 8878108397, पीसीओ चन्द्रभान कोल 7999793743, राजस्व निरीक्षक उमाकांत मिश्रा 9993076796, नायब तहसीलदार उमाकांत शर्मा 9329317036, सीईओ ओपी अस्थाना 8120057310, तहसीलदार आरडी साकेत 8349870483 एवं एसडीएम आरती यादव 7974014384 पर अवगत करा सकते हैं।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।